सर्वशक्तिमान

(गायत्री-मंत्र)

सरोज शर्मा

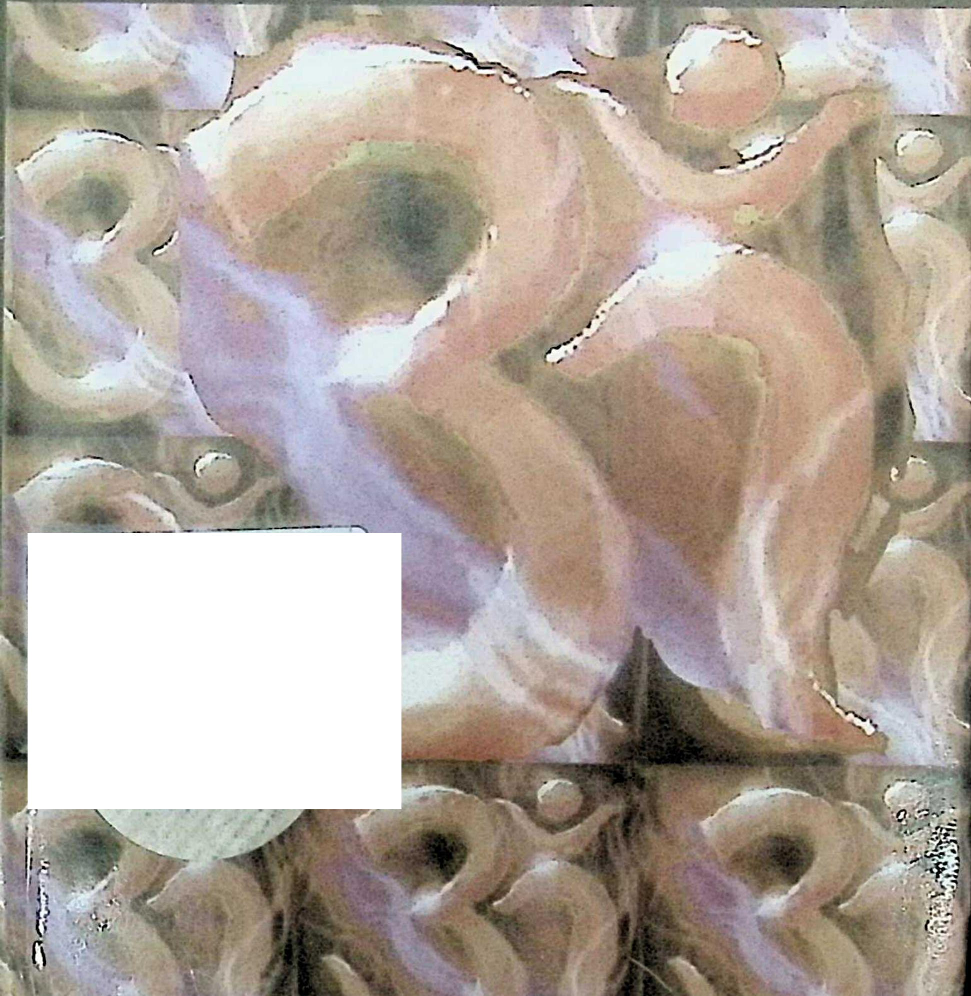

विश्वामित्र का कथन है कि 'गायत्री मंत्र' के समान चारों वेदों में और कोई मंत्र नहीं है। सम्पूर्ण वेद, यज्ञ, दान, तप गायत्री मंत्र की एक कला के समान भी नहीं है। भगवान मनु का कथन है कि 'ब्रह्मा जी ने चारों वेदों का सार गायत्री मंत्र निकाला। अत्रि ऋषि कहते हैं कि जो गायत्री मंत्र के तत्त्व को समझता है उसके लिये संसार में कोई दुःख शेष नहीं रहता। व्यास जी कहते हैं कि सिद्ध किया गया गायत्री मंत्र कामधेनु के समान है। गंगा शरीर के पापों को दूर करती है और गायत्री मंत्र से आत्मा निर्मल होती है। भारद्वाज ऋषि का कथन है कि गायत्री मंत्र से ब्रह्म साक्षात्कार होता है। और मनुष्य स्वर्ग तथा मुक्ति का अधिकारी होता है। शंख ऋषि कहते हैं कि नरक रूपी समुद्र में गिरते हुए को हाथ पकड़कर बचाने वाला गायत्री मंत्र ही है।

Lib. ½
15-03.04

M-7976

Vedanta

कोई मंत्र
दान, तप
के समा
मनु का
चारों वेद
निकाला।
जो गायत्री
है उसके
शेष नहीं
कि सिद्ध
कामधेनु
के पापों क
मंत्र से
भारद्वाज
गायत्री मं
है। और
का अधिव
कहते हैं
गिरते हुए
वाला गाय

सर्वशक्तिमान

(गायत्री मंत्र)

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्

कं
दा
के
म
चा
नि
जो
है
शे
कि
का
के
मंत्र
भा
गा
है।
का
कह
गि
वा

सर्वशक्तिमान

(गायत्री मंत्र)

सरोज शर्मा

RGCSLIB
07976

पल्लव प्रकाशन
दिल्ली

सर्वशक्तिमान—गायत्री मंत्र

© सरोज शर्मा

ISBN : 81-88387-26-6

मूल्य : 95.00 मात्र/प्रथम संस्करण : 2003
प्रकाशक : पल्लव प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली—110006
अक्षर टंकण : मानस टाईपसैटर, नयी दिल्ली-110002
मुद्रक : एस० एन० प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली—110032

सर्वशक्तिमान—गायत्री मंत्र सरोज शर्मा

दो शब्द

छान्दोग्य उपनिषद् के अनुसार "यह विश्व जो कुछ भी है समस्त गायत्रीमय ही है।" जो भी गायत्री मंत्र को जानकर अपने जीवन में धारण कर लेता है। वह त्रैलोक्य विजयी होता है ऐसा वृहदारण्यकोपनिषद् कहता है।

गायत्री मंत्र की साधना न केवल उसमें सत् तत्त्व की अभिवृद्धि करती है, उसे वह सब कुछ देती है जो कि सद्बुद्धि पाने पर किसी को भी अभीष्ट होता है। साधना से सिद्धि एक सुनिश्चित सिद्धान्त है किन्तु वह गायत्री साधना के सन्दर्भ में तो हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है।

गीता में कृष्ण ने स्वयं कहा है-"गायत्री छन्द सामहम्" अर्थात् गायत्री मंत्र मैं ही हूँ। भगवान् की उपासना के लिये गायत्री मंत्र से बड़ा और कोई मंत्र नहीं हो सकता। गायत्री मंत्र जैसी महाशक्ति का आँचल पकड़ कर हर एक व्यक्ति लाभान्वित हो सकता है और दूसरों को लाभ पहुँचा सकता है। गायत्री मंत्र का जाप करने वाले के शाप-अभिशाप सर्वथा सफल होते हैं। ऐसे महापुरुषों के आस-पास का वातावरण सात्विक होता है और उन्हें दिव्य प्रकाश का दर्शन प्राप्त रहता है। इस पुस्तक में गायत्री मंत्र की दिव्य शक्तियों का शास्त्रीय प्रमाणों सहित कथा प्रसंगों की पुष्टि के साथ विवरण किया गया है।

ॐ
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

अनुक्रम

1. गायत्री मंत्र का अर्थ 7
2. ऋषि-मुनियों के विचार 12
3. आत्मा की उन्नति का मार्ग 19
4. प्राचीन कथाओं में गायत्री मंत्र 23
5. गायत्री मंत्र द्वारा योग साधना 52
6. गायत्री मंत्रों द्वारा कष्टों से मुक्ति 55
7. मानवीय समस्याओं का हल 60
8. आत्मोद्धार की भावना 64
9. समृद्धि और सफलता का साधन 70
10. दिव्य शक्ति का नाम गायत्री मंत्र 72

मानव धर्म
के
स्रोत
सनातन धर्म
बौद्ध धर्म
जैन धर्म
सिख धर्म
आर्यसमाज
मुस्लिम धर्म
ईसाई धर्म
पारसी धर्म
यहूदी धर्म

गायत्री मंत्र का अर्थ

भारतीय संस्कृति के चार आधार स्तम्भों में गो, गंगा, गीता और गायत्री मंत्र हैं। इनमें सबसे पहला स्थान गायत्री मंत्र का आता है। भारतीय संस्कृति में हिन्दू धर्म के अनुसार सभी शास्त्रों, सभी सम्प्रदायों और सभी ऋषियों ने गायत्री मंत्र की महिमा को एक साथ मिलकर स्वीकार किया है।

गायत्री मंत्र में ओ३म् शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है क्योंकि इसमें अ, उ और म तीन अक्षर मिलकर ही (ओ३म्) शब्द बना है। इस एक नाम में परमेश्वर के बहुत से नाम आते हैं। जैसे अकार में विराट, अग्नि में विश्वादि। उकार में हिरण्यगर्भ, वायु और तेजसादि। मकार में ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का समावेश है। इनका ऐसा ही वेदों और शास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया गया है। यह भी कहा गया है कि प्रकरणानुकूल ये सभी नाम परमेश्वर के ही हैं।

गायत्री मंत्र में ''भू'' जो सारे संसार के जीवन का आधार है, प्राण से भी प्रिय सारे दुःखों से दूर है, वही ''भू'' परमेश्वर का नाम है। गायत्री मंत्र का ''भुव'' जो सब कष्टों से रहित है। जिसके साथ से जीव सब कष्टों से छूट जाते हैं उसी परमेश्वर का नाम ''भुव'' है। गायत्री मंत्र का ''स्व'' जो सारे जगत् में व्यापक होकर भी सब कुछ धारण करता है उसी परमेश्वर का नाम ''स्व'' है। ये

तीनों सारे जगत् के उत्पादक और सब ऐश्वर्यदाता है। गायत्री मंत्र में "तत्" शब्द का अर्थ है कि इस शरीर के क्षणिक सुखों को अपने जीवन का महत्त्व समझो। इस मंत्र के "सवितु" का अर्थ है कि अपने आपको बुद्धि, विद्या, यश, स्वास्थ्य, धन, मैत्री, साहस जैसी शक्तियों को सम्पन्न करना। गायत्री मंत्री के "वरेण्य" शब्द का अर्थ है कि इस रंगीन संसार में से केवल श्रेष्ठता को ही ढूँढे। इस मंत्र के "भर्गो" शब्द से यह उपदेश मिलता है कि अपने भय, शरीर और व्यवहार को निर्मल रखो। इस मंत्र के "देवस्य" शब्द का अर्थ है उदारता और दूरदर्शिता। "धीमहि" अर्थात् सद्गुण, उत्तम स्वभाव और उच्च विचार। "धियो" शब्द का अर्थ है कि किसी व्यक्ति, ग्रन्थ या सम्प्रदाय का अन्धानुकरण न करके विवेक के आधार पर ही उचित मार्ग को स्वीकार करें। "योन" शब्द से यह शिक्षा मिलती है कि समज्ञ, सहिष्णुता, श्रम और सदुपयोग का पालन करें। "प्रचोदयात्" का अर्थ है कि गिरते को उठाना, प्रेरणा देना, उत्साहित करना, सेवा करना।

गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों का गुंथन ऐसा विचित्र एवं रहस्यमय है कि उसके उच्चारण मात्र से जिह्वा, कण्ठ, तालु एवं मूर्धा में अवस्थित नाड़ी तन्तुओं का एक अद्भुत क्रम में संचालन होता है। गायत्री मंत्र के उच्चारण होने से शरीर में विविध स्थानों पर छिपे हुए शक्ति चक्रों पर उसकी चोट पड़ती है और उनका सूक्ष्म जागरण होता है, इस संचालन से शरीर के विविध स्थानों में छिपे हुए षट चक्र, भ्रमर, कमल, ग्रन्थि, संस्थान एवं शक्तिचक्र झंकृत होने लगते हैं। मुख की नाड़ियों से गायत्री मंत्र के शब्दों के उच्चारण का आघात सीधा उन चक्रों तक पहुँचता है।

गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों का उच्चारण उन चौबीस चक्रों में एक झंकारमय गुंजार उत्पन्न करता है, जिससे वे स्वयंमेव जाग्रत होकर साधक को योग शक्तियों से सम्पन्न बनाते हैं। इस प्रकार गायत्री मंत्र के जाप से अनायास ही एक महत्त्वपूर्ण योग

साधना होने लगती है।

गायत्री मंत्र को त्रिपदी कहा गया है। वह तीन नेत्रों वाली त्रिशूल धारणी है। यह तीन तत्त्व हैं :–

1. ज्ञान, बुद्धि, विवेक, प्रेम, सदाचार।

2. धन, वैभव, पद, प्रतिष्ठा, भोग, ऐश्वर्य।

3. स्वास्थ्य, बल, साहस, पराक्रम, पुरुषार्थ।

गायत्री मंत्र की उपासना का तात्पर्य है इन तीनों प्रकार की शक्तियों को प्राप्त करने का प्रयत्न।

वेद शास्त्रों की शिक्षाओं का सार गायत्री मंत्र में आ गया है। गायत्री मंत्र के 24 अक्षरों में दिव्य जीवन की समस्त योजना, नीति, विचारधारा, कार्य प्रणाली सन्निहित है। इस प्रकार गायत्री मंत्र से माता-पिता और गुरु के द्वारा हमारे आदर्शवादी जीवन का जन्म होता है।

गायत्री मंत्र निगुणात्मक है। एक तरफ जहाँ इस मंत्र की उपासना से सतोगुण बढ़ता है वही दूसरी तरफ यह कल्याणकारक और रजोगुण की वृद्धि करता है। जो गुण, मनुष्य की गुप्त शक्तियों का आत्म बल बढ़ाने में सहायक होता है। गायत्री मंत्र की साधना करने वाले कभी भी अभावग्रस्त व हीन नहीं रह सकते। दैवी शक्तियों का अहसास गायत्री मंत्र के साधकों को एकाएक होने लगता है। भविष्य की घटनाओं का आभास पहले से होने लगता है। एक मुख्य बात यह है कि गायत्री मंत्र के साधक के शाप और अभिशाप अवश्य सफल होते हैं।

ऋषि-मुनियों के विचार

प्राचीन ऋषि मुनियों ने जो अनेक अमूल्य रत्न हमें दिये हैं उनमें से श्रेष्ठ रत्न गायत्री मंत्र है। जिस प्रकार प्राचीन ऋषियों ने गायत्री मंत्र के महत्व को स्वीकार किया है उसी तरह वर्तमान शताब्दी के महापुरुष भी वैसा ही मानते हैं।

ऋषि विश्वामित्र के अनुसार—चारों वेदों में कोई मंत्र ऐसा नहीं है जो गायत्री मंत्र के समान हो। सारे वेद, तप, यज्ञ, दान, गायत्री मंत्र की एक कला के समान भी नहीं हैं। भगवान मनु का कहना है कि—ब्रह्मा जी ने गायत्री मंत्र को चारों वेदों का सार बतलाया। इसी को जानने से वेद का ज्ञान प्राप्त होता है। पाराशर ऋषि के अनुसार—जिसे गायत्री मंत्र का ज्ञान नहीं है वह शूद्र के समान है। शंख ऋषि के अनुसार नरक में गिरते हुए को बचाने वाला गायत्री मंत्र ही है। अत्रि ऋषि के अनुसार जो गायत्री मंत्र के मर्म को समझता है वह संसार में सदा सुख का अनुभव करता है। उसके लिये जगत् में कोई दुख शेष नहीं रह जाता। व्यास जी के अनुसार—गायत्री मंत्र कामधेनु के समान है। जैसे गंगा से शरीर के पाप दूर होते हैं उसी प्रकार गायत्री मंत्र आत्मा को निर्मल बना देता है। भारद्वाज ऋषि के अनुसार—ब्रह्म के साक्षात्कार केवल गायत्री मंत्र ही कराता है, जो मनुष्य के लिये स्वर्ग तथा मुक्ति का मार्ग खोल देता है। नारद मुनि के अनुसार गायत्री मंत्र साक्षात्

शक्ति का अवतार है। वशिष्ठ मुनि के अनुसार—मंदबुद्धि और कुमार्गगामी भी गायत्री मंत्र के प्रभाव से सफलता का मार्ग प्राप्त करते हैं।

प्राचीन काल में जैसा ऋषियों और मुनियों ने गायत्री मंत्र की महिमा को स्वीकार किया था वैसा ही आज के महापुरुष भी स्वीकार करके उसका आदर करते हैं। गांधी जी के अनुसार शान्त मन से किया गया गायत्री मंत्र का जप सभी संकटों को दूर करने का प्रभाव रखता है। लोकमान्य गंगाधर तिलक के अनुसार गायत्री मंत्र का जप करने से कुमार्ग छोड़कर सुमार्ग पर चलने की बुद्धि आती है। मदनमोहन मालवीय जी कहते थे कि ऋषियों ने जो अनेक अमूल्य रत्न हमें दिये हैं उन सबमें गायत्री मंत्र श्रेष्ठ है। रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार—यह गायत्री मंत्र राष्ट्र की आत्मा को जगाने वाला श्रेष्ठ मंत्र है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी के अनुसार —बड़ी-बड़ी सिद्धियां गायत्री मंत्र से मिल सकती हैं।

प्राचीन काल में प्रायः सभी ऋषि-मुनि गायत्री मंत्र की उपासना से ही अनेक प्रकार की योग साधना करते थे। ऋषि दधीचि तप करते-करते साक्षात् गायत्री मंत्र के तेज से पुंज बन गए थे। उनकी अस्थियों का वज्र बनाकर इन्द्र ने राक्षसों पर विजय प्राप्त की थी। गायत्री मंत्र को ब्रह्मास्त्र कहा है। इस मंत्र का प्रहार कभी खाली नहीं जाता। गायत्री मंत्र इस भूलोक की कामधेनु है जिसका रसपान करने वाला कभी दुःखी, निराश, असन्तुष्ट और अतृप्त नहीं रहता।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार—गायत्री मंत्र सभी मंत्रों की मुकुट मणी है। जगद्गुरु शंकराचार्य के अनुसार—मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है गायत्री मंत्र की महिमा का वर्णन करना। स्वामी रामतीर्थ के अनुसार गायत्री मंत्र मनुष्य की बुद्धि को "काम" से हटाकर "राम" के पास लगा देता है। महर्षि रमण के अनुसार—गायत्री मंत्र का जप करने से

आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। स्वामी शिवानन्द जी के अनुसार—गायत्री मंत्र का जप करने से बुद्धि सूक्ष्म, शरीर निरोग होता है।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती गायत्री मंत्र के श्रद्धालु उपासक थे। वे गायत्री मंत्र की उपासना पर विशेष जोर देते थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अनेकों स्थानों पर गायत्री मंत्रों के अनुष्ठानों का आयोजन कराया था। गायत्री मंत्र आत्म-बल बढ़ाने का एक अचूक आध्यात्मिक व्यायाम है।

गायत्री मंत्र इस पृथ्वीलोक की कामधेनु के समान है। इसके जप से मनुष्य उन सब कामनाओं को पूरा कर सकता है जो उसके लिये आवश्यक हैं। गायत्री मंत्र को अमृत कहा गया है क्योंकि यह मंत्र आत्मा की पिपासाओं की शान्ति करता है। इस मंत्र के जप से मनुष्य जीवन में कुछ न कुछ कर निकलता है। इसलिये इसे पारस मणी भी कहा गया है। गायत्री मंत्र की उपासना प्रत्येक के लिये धर्मकृत्य है। गायत्री मंत्र का जप करने से आत्मा का कायाकल्प हो जाता है। इस मंत्र के सतोगुणी तत्वों की अभिवृद्धि होने से दुर्गुण, कुविचार, दुःस्वभाव एवं दुर्भाव घटने प्रारम्भ हो जाते हैं और संयम, नम्रता, पवित्रता, उत्साह, स्फूर्ति, श्रमशीलता, मधुरता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, उदारता, प्रेम, सन्तोष, शान्ति, सेवाभाव और आत्मीयता दिनोंदिन तेजी से बढ़ती जाती है।

गायत्री मंत्र का जप करने से मन में परिवर्तन आता है। दूरदर्शिता, विवेक और तत्व ज्ञान बढ़ता है। हानि, शोक, वियोग, आपत्ति, रोग, आक्रमण, विरोध आदि जहाँ साधारण मनोभूमि के लोग मृत्यु तुल्य कष्ट पाते हैं वहाँ आत्म-बल सम्पन्न गायत्री मंत्र के जप करने वाले अपने विवेक, ज्ञान, वैराग्य, साहस, आशा, धैर्य, संतोष, संयम और ईश्वर विश्वास के आधार पर इन सभी कठिनाईयों को खुशी-खुशी आसानी से सह लेते हैं। गायत्री मंत्र का जप करने वाले को सबसे बड़ा लाभ ''आत्म बल'' है।

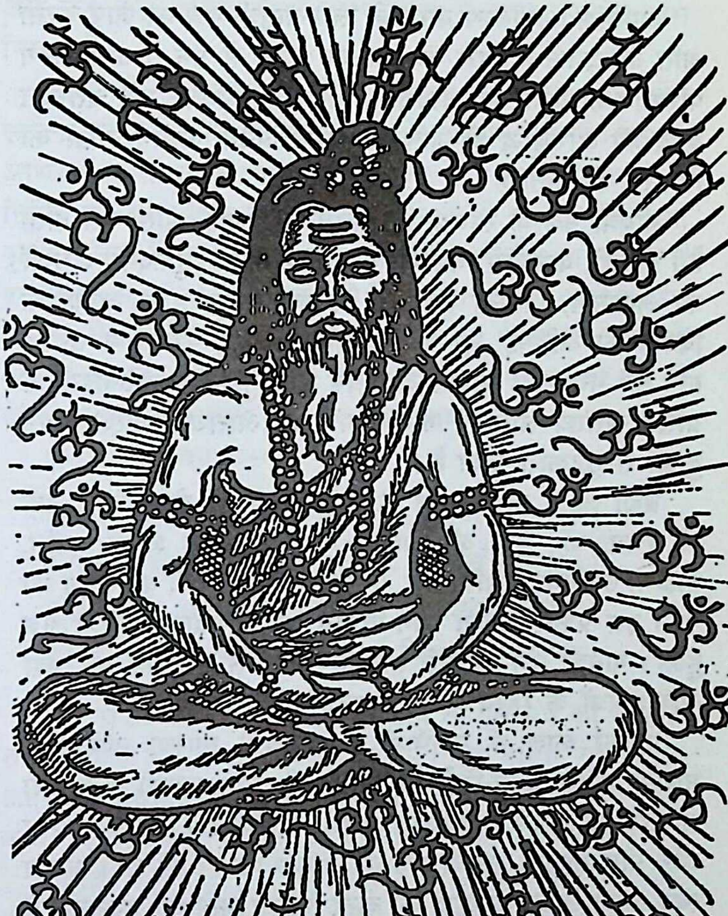

आत्मिक कायाकल्प करने के लिये गायत्री मंत्र का जाप करना अति आवश्यक है। इस मंत्र का जप करने से मन में असाधारण परिवर्तन हो जाता है। तत्वज्ञान, विवेक, दूरदर्शिता एवं ऋतम्बरा बुद्धि की अभिवृद्धि हो जाने के कारण अनेक अज्ञान दुःखों का निवारण हो जाता है।

गायत्री मंत्र के साधक क़ो सबसे बड़ा लाभ आत्म-बल होता है। बीमारी, कमजोरी, बेकारी, घाटा, गृह-कलह, मुकदमा, शत्रुओं का आक्रमण, दाम्पत्य सुख का अभाव, संतान दुःख, कन्या के विवाह की कठिनई, बुरे भविष्य की आशंका, परीक्षा में उत्तीर्ण होने का भय, बुरी आदतों के बंधन ऐसी मुश्किल कठिनाइयों से ग्रसित असंख्य लोगों ने गायत्री मंत्र की आराधना करके अपने दुःखों से छुटकारा पाया है।

ब्रह्मा जी ने गायत्री मंत्र के सारे अक्षरों को लेकर चारों वेदों की रचना की, वेदों की व्याख्या करने के लिये शास्त्र, दर्शन, ब्राह्मण, उपनिषद्, स्मृति, सूत्र, पुराण, इतिहास आदि की रचना की गई। इस प्रकार समस्त ज्ञान-विज्ञान का जन्मदाता गायत्री मंत्र हुआ। गायत्री मंत्र को पूरी तरह से समझ लेने पर ही सारे वेदों ओर शास्त्रों के रहस्य की जानकारी मिल जाती है।

प्राचीन काल में महर्षियों ने बड़ी-बड़ी तपस्या और योग साधना करके ऋषि-सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। उनकी चमत्कारी शक्तियों के वर्णन से इतिहास पुराण भरे पड़े हैं। उन्होंने तपस्या और भोग साधना गायत्री मंत्र के आधार पर ही की थी। आत्मा स्वयं अनेक ऋद्धि-सिद्धियों का केन्द्र है। जो शक्तियाँ परमात्मा में हैं वही शक्तियाँ गायत्री मंत्र में विद्यमान हैं।

सभी धर्म ग्रन्थों का अन्वेषण करने पर पाया कि गायत्री मंत्र से बढ़कर कोई साधना नहीं है। प्राचीन ऋषि, महर्षियों ने इसी महामंत्र की साधना करके महानता को प्राप्त किया था। गायत्री मंत्र के जप से अनायास ही महत्त्वपूर्ण योग साधना होने लगती है

और उन गुप्त शक्ति केन्द्रों के जागरण से आश्चर्यजनक लाभ मिलता है।

सृष्टि के आदिकाल से जिन महात्माओं ने तप एवं योग साधना की है उन्होंने 'गायत्री मंत्र' को आधार रखा है। सम्पूर्ण आध्यात्मिक तत्त्वों की चाबी गायत्री मंत्र में है इसके बिना आत्म सिद्धि का ताला खुल नहीं सकता। कितने ही ऋषि, मुनि, राम, कृष्ण, शंकर, विष्णु, ब्रह्मा, दुर्गा, सूर्य आदि को ईष्ट मानकर उन्हें प्रसन्न करके शक्ति प्राप्त करने के लिये योग साधना करते रहे है। कितनों ने निराकार ब्रह्म की उपासना की है। परन्तु हर एक को गायत्री मंत्र का आश्रय अवश्य लेना पड़ा है। बिना गायत्री मंत्र के कोई भी तप या साधन सफल नहीं हो सकता।

शास्त्र का वचन है—

अस्य कस्यापि मंत्रस्य पुरुश्चणमारभत्।
व्याहृति त्रय संयुक्ता गायत्री चायुतं जपेत।।
नृसिंहार्क बराह्मणां कौला तांत्रिका तथा।
बिना जप्त्वातु गायत्री सत्सर्व निष्फलं भवेत।।

जब किसी मंत्र का साधन किया जाय तो उस मंत्र को व्याहृति समेत गायत्री मंत्र के साथ जपना चाहिये। चाहे नृसिंह, सूर्य, वराह आदि की उपासना हो या वाम मार्ग के कौल तांत्रिक प्रयोग किये जायें, बिना गायत्री मंत्र को आगे लिये वे सभी निष्फल होते हैं।

गायत्री मंत्र चारों वेदों की माँ है। उसके बिना वेदों की कोई भी साधना सफल नहीं होती। साथ ही तांत्रिक, कौल, अवधूत, कापालिक, अघोर आदि वाममार्ग में जिस शक्ति की आवश्यकता पड़ती है उसका मूल उद्गम गायत्री मंत्र ही है।

प्राचीन इतिहास पुराणों से पता चलता है कि सभी ऋषि-महर्षि गायत्री मंत्र के आधार पर ही योग साधना और तपश्चर्या करते थे। गीता में भगवान् ने स्वयं कहा है—'गायत्री छन्द सामहम्'

अर्थात् गायत्री मैं ही हूँ। भगवान की उपासना के लिये गायत्री मंत्र से बड़ा और कोई मंत्र नहीं हो सकता।

वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विश्वामित्र, भारद्वाज, नारद, कपिल, कणादि, गौतम, व्यास, शुकदेव, दधीचि, वाल्मीकि, दत्तात्रेय, अगस्त्य आदि ऋषियों के विस्तृत जीवन चरित्र लिखकर इस लेख में यह बताने का स्थान नहीं कि उन्होंने वेद माता की उपासना करके किस प्रकार परम सिद्धि प्राप्त की थी और गायत्री मंत्र की शक्ति द्वारा वे कितनी महान सफलताएँ प्राप्त कर सके थे। इतिहास पुराण के ज्ञाताओं से इन महर्षियों के चरित्र छिपे नहीं हैं।

कुछ समय पूर्व अनेक ऐसे महात्मा हुए हैं जिन्होंने गायत्री मंत्र का आश्रय लेकर अपनी प्रतिभा को प्रकाशित किया। शंकराचार्य, गुरु रामदास, दादू दयाल, संत ज्ञानेश्वर, स्वामी रामानन्द, गोरखनाथ, हरिदास, तुलसीदास, रामानुजाचार्य, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, रामतीर्थ, योगी अरविन्द, महर्षि रमण आदि प्रातः स्मरणीय महात्माओं का आत्मिक विकास इस महाशक्ति के अंचल में ही हुआ था।

वर्तमान काल में तीर्थ स्वरूप शरीर धारण किए हुए अनेक महात्मा जिनमें कुछ ज्ञात, कुछ अज्ञात स्थानों पर तप कर रहे हैं और गायत्री मंत्र की श्रद्धापूर्वक उपासना करते हैं। महात्मा गांधी, मदनमोहन मालवीय, रविन्द्रनाथ ठाकुर, राधाकृष्णन, शंकराचार्य आदि महापुरुषों ने गायत्री मंत्र की महानता के सम्बन्ध में अपने जो उद्गार प्रकट किए हैं वे बहुत ही विचार-पूर्ण और मनन करने योग्य है।.

अनेक महात्मा भूतकाल में गायत्री मंत्र द्वारा असाधारण सिद्धियाँ प्राप्त कर चुके हैं। जो शास्त्र-मर्म के ज्ञाता हैं, भारतीय योग विद्या से परिचित हैं। उन सभी साधकों की आराधना में गायत्री मंत्र का प्रारम्भिक ज्ञान है। गायत्री मंत्र की नाव पर सवार होकर ही भवसागर को तरा जा सकता है।

आत्मा की उन्नति का मार्ग

आत्मा स्वयं अनेक ऋद्धि-सिद्धियों का केन्द्र है। जो शक्तियाँ परमात्मा में हैं वे ही आत्मा में हैं। समस्त ऋद्धि-सिद्धियों का केन्द्र आत्मा में है परन्तु जिस प्रकार राख से ढका अंगार मन्द हो जाता है वैसे ही आन्तरिक मलिनताओं के कारण आत्म तेज कुंठित हो जाता है। गायत्री मंत्र की साधना से वह मलिनता का पर्दा हटता है और राख हटा देने से जैसे अंगार अपने प्रज्जवलित स्वरूप में दिखाई पड़ने लगता है वैसे ही साधक की आत्मा भी अपने ऋद्धि-सिद्धि समन्वित ब्रह्म तेज के साथ प्रकट होती है। योगियों को जो लाभ दीर्घकाल तक कष्ट साध्य तपस्याएं करने से प्राप्त होता है, वही लाभ गायत्री मंत्र का जाप करने वाले को स्वल्प प्रयास से प्राप्त हो जाता है।

गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों का गुंथन ऐसा विचित्र एवं रहस्यमय है कि उसके उच्चारण मात्र से जिह्वा, कण्ठ, तालु एवं मूर्धा में अवस्थित नाड़ी तन्तुओं का एक अद्भुत क्रम से संचालन होता है।

सबसे उत्तम यह है कि निष्काम होकर अटूट शृद्धा और भक्तिभाव से गायत्री मंत्र की उपासना की जाय, कोई कामना पूर्ति की शर्त न लगाई जाये। क्योंकि मनुष्य अपने वास्तविक लाभ या हानि और आवश्यकता को स्वयं उतना नहीं समझता जितना कि

घट-घटवासिनी सर्वशक्तिमान गायत्री माता समझती है। वह हमारी वास्तविक आवश्यकता को स्वयं पूरा करती है। प्रारब्धवश कोई अटल दुर्भाग्य न भी टल सके तो गायत्री मंत्र की साधना कभी भी निष्फल नहीं जाती। वह किसी न किसी मार्ग से साधक को उसके श्रम की अपेक्षा अधिक गुण लाभ अवश्य पहुँचा देती है। सबसे बड़ा लाभ आत्म कल्याण का है। जो यदि संसार के समस्त दुःखों को अपने ऊपर लेने से प्राप्त होता है तो भी प्राप्त करना चाहिये।

परमात्मा द्वारा दी गई दिव्य शक्तियों में से गायत्री मंत्र एक महान शक्ति है। इस महान शक्ति को प्राप्त करने का जो विज्ञान-सम्मत मार्ग है वह उपासना कहलाता है। उपासना की वैज्ञानिक पद्धति का अवलम्बन करने से गायत्री मंत्र की महाशक्ति को अधिक मात्रा में अपने में धारण किया जा सकता है। जिस प्रकार धन, स्वास्थ्य, विद्या, चातुर्य, शिल्पकला आदि योग्यताओं को अधिक मात्रा में ग्रहण करने वाला मनुष्य बड़ा आदमी, प्रतिष्ठित, सुसम्पन्न बन जाता है। उसी प्रकार गायत्री मंत्र के द्वारा आत्म-बल संचय करने वाला भी महात्मा बन जाता है।

गायत्री मंत्र वेदों की जननी है। उनमें अनेकों रहस्य छिपे हुए हैं। कोई गायत्री मंत्र का साधक जब कोई रहस्य जान लेता है तो वह ऐसा कार्य करने में सक्षम हो जाता है जिसे देखकर आश्चर्य होता है। योग साधना में गायत्री मंत्र सबसे सरल, सबसे श्रेष्ठ और सबसे शीघ्र सफल होने वाला है। इस महामंत्र के जप से शरीर और मन के अनेक शक्तिशाली एवं रहस्यमय चक्र अपने आप विकसित होते हैं। गायत्री मंत्र के उच्चारण से कुछ ऐसी नाड़ियों तथा माँस पेशियों पर प्रभाव पड़ता है जो गुप्त योगिक ग्रंथियों को धीरे-धीरे अपने आप जाग्रत करती हैं। और मनुष्य अपने आप अनायास ही सिद्धि के मार्ग पर चल पड़ता है।

आत्म कल्याण के लिये गायत्री मंत्र के अलावा और साधन नहीं है। तपस्वी और योगी पुरुष लम्बे समय तक साधना करके

जितना भी लाभ ग्रहण करते हैं वह लाभ गायत्री मंत्र के द्वारा कम समय और कम श्रम से मिल जाता है। आम मनुष्य अपने दोषों से गायत्री मंत्र का जप करके छुटकारा पा सकता है।

गायत्री मंत्र की शिक्षायें सर्वश्रेष्ठ धर्मशास्त्र का सार हैं। उन शिक्षाओं को अपनाने का अर्थ है आध्यात्मिकता, सात्विकता, पवित्रता और आस्तिकता को अपनाना। इन सभी को अपनाने के पश्चात् दूसरी सारी सम्पदाएँ मनुष्य को स्वयं प्राप्त हो जाती हैं।

गायत्री मंत्र की उपासना करने वाले का सबसे मुख्य लाभ आध्यात्मिक है। इससे अनेक सांसारिक लाभ होते हुए देखे गये हैं—(1) आत्म कल्याण, जीवन मुक्ति, ब्रह्म निर्वाण; (2) आत्मा का अन्तःस्थल स्वच्छ हो जाने पर उसमें छिपी हुई सिद्धियों का जागरण, (3) अपने दुर्गुण और दोषों के दूर हो जाने से प्रतिष्ठा, पुण्य और आनन्द की प्राप्ति। यह तीनों ऐसे महत्त्वपूर्ण लाभ हैं जिन्हें गायत्री मंत्र का जप करने वाला ही पा सकता है। यह बात निश्चित है कि श्रद्धा रखने वाला ही आध्यात्मिक लाभ अवश्य प्राप्त करता है।

गायत्री मंत्र की साधना आत्मोद्धार का अपूर्व साधन है। दुनिया का कोई भी व्यक्ति किसी भी लाभ के विचार से गायत्री मंत्र का आश्रय ग्रहण करे, सबसे पहले उसे अपनी आत्मा में एक नवीन परिवर्तन अवश्य जान पड़ता है। उसे अनुभव होने लगता है कि आत्मा का विकार निकलकर सतोगुणी तत्त्वों की वृद्धि हो रही है। इसके फलस्वरूप अनेक दुर्गुण, बुरे विचार, खराब स्वभाव और ईर्ष्या-द्वेष आदि के भाव घटने लगते हैं और उसके स्थान पर संयम, पवित्रता, उत्साह, श्रमशीलता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, उदारता, प्रेम, संतोष, सेवाभाव आदि सद्गुणों का विकास होने लगता है। इस परिवर्तन का स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि अन्य लोग भी उसके प्रति प्रशंसा, कृतज्ञता और सम्मान की भावना रखने लगते हैं। और उसे चारों ओर से सहानुभूति प्राप्त होने लगती है।

गायत्री मंत्र की उपासना करने वाला ही आत्मोन्नति कर सकता है। यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि गायत्री मंत्र के आँचल को पकड़ कर उन्नति की दिशा में अवश्य ऊँचे पहुँचेंगे। गायत्री मंत्र की महिमा में कहा गया है :

'तत्दियृचः समो नास्ति मन्त्रों वेद चतुष्टये।
सर्वे वेदाश्च दानानि च तपांसि च।।
समानि कलया प्रहुर्मुनयो नतदित्यृ च।।"

—विश्वामित्र

ऋषि और मुनियों का कथन है कि गायत्री मंत्र के समान और मंत्र चारों वेदों में नहीं हैं। चारों वेद, यज्ञ, दान, तप गायत्री मंत्र की एक कला के समान भी नहीं हैं।

ॐ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो
योनः प्रचोदयात्

प्राचीन कथाओं में गायत्री मंत्र

पौराणिक कथा प्रसंगों में स्थान-स्थान पर गायत्री मंत्र की उपासना से आध्यात्मिक, भौतिक सफलताएँ मिलने के आख्यान मिलते हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार ऐसे बहुत से प्राचीन सिद्ध उपासक हुए हैं जो गायत्री मंत्र का सहारा लेकर शान्ति के शिखर पर पहुँचे हैं। यजुर्वेद में गायत्री मंत्र को महामंत्र के रूप में अलंकृत किया गया है—

चत्वारिश्शृंगा त्रयो अस्य पादा,
द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति,
महादेवो मर्त्या आविवेश।।

चार सींग वाला, तीन पैर वाला, दो सिर वाला, सात हाथों वाला, तीन जगह बंधा हुआ यह गायत्री महामंत्र रूपी वृषभ जब दहाड़ता है तो महान देव बन जाता है और अपने सेवक का कल्याण करता है।

गायत्री मंत्र के 24 अक्षरों को दक्ष की परब्रह्म 24 कन्याएं बताया गया है। ऐसा लिखा गया है कि इन कन्याओं का पाणि-ग्रहण संस्कार धर्म ने किया—

चतुर्विंशति कन्याश्च सृष्टवान् दक्ष उत्तमः।
श्रद्धा लक्ष्मीर्धृतिस्तुष्टिः पुष्टिर्मेधा क्रिया तथा।।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिर्ऋद्धिः कीर्तिस्त्रयोदशी।
पत्न्यर्थ प्रतिजग्राह धर्मो दाक्षायणः प्रभुः।।

दक्ष ने चौबीस कन्याओं को जन्म ग्रहण कराया था, उनके शुभ नाम श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, पुष्टि, तुष्टि, मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शान्ति, ऋद्धि, कीर्ति आदि थे। इनका दाक्षायन प्रभु धर्म ने अपनी पत्नियाँ बनाने के लिये ग्रहण किया था।

देवी भागवत के अश्वपति उपाख्यान में अनुदान का वर्णन इस प्रकार आता है—

ततः सावित्र्युपाख्यानं तन्मे व्याख्यातुमर्हसि।
पुरा केन समुद्रभुता सा श्रुता च श्रुतेः प्रसः।।
केन वा पूजिता लोके प्रथमे कैश्च वा परे।।
ब्रह्मणा वेदजननी प्रथमें पूजिवा मुने।
द्वितीये च वेदगणैस्तत्पश्चाद्दिषां गणेः।।
तदा चाश्वपतिर्भूपः पूजयामास भारत।
तत्पश्चात्पूजयामासुर्वर्णाश्चत्वार एव च।।

—देवी भागवत

नारद ने भगवान् से पूछा कि श्रुतियाँ गायत्री मंत्र से उत्पन्न हुई हैं तो आप गायत्री मंत्र की उत्पत्ति के बारे में बताइये। भगवान ने कहा—वेद जननी गायत्री मंत्र की उपासना सर्वप्रथम ब्रह्मा ने की, फिर देवता उनकी आराधना करने लगे। फिर विद्वान, ज्ञानी-तपस्वी उसकी साधना करने लगे। राजा अश्वपति ने विशेष रूप से उसकी तपश्चर्या की और फिर चारों ही वर्ण गायत्री मंत्र

की उपासना करने लगे।

प्राचीन ग्रंथ महाभारत के वन पर्व में, सावित्री से अग्निहोत्र की अग्नि में से प्रकट होने और राजा की साधना युक्त उपासना से प्रसन्न होकर उसे वरदान देने की चर्चा इस प्रकार आती है :—

रूपिणी तु तदा राजन् दर्शयामास तं नृपम्।
अग्निहोत्रात् समुत्थाय हर्षेण महतान्विता।।
उवाच चैनं वरदा वचनं पार्थिवं तदा।
सा तमश्वपतिं राजन् सावित्रीनियमेस्थितम्।।

—महाभारत वनपर्व

जब मूर्त्तिमयी सवित्री देवी ने अग्निहोत्र की अग्नि से प्रकट होकर बड़े हर्ष के साथ राजा को प्रत्यक्ष दर्शन दिया और वर देने के लिये उद्यत हो अनुष्ठान के नियमों में स्थित उस राजा अश्वपति से इस प्रकार कहा :—

ब्रह्मचर्येण शुद्धेन दमेन नियमेन च।
सर्वात्मना च भक्त्या च तुष्टास्मि तव पार्थिव।।

सावित्री ने कहा—राजन् ! मैं तेरे विशुद्ध ब्रह्मचर्य, इन्द्रिय संयम मनो-निग्रह तथा सम्पूर्ण हृदय से की हुई भक्ति के द्वारा बहुत प्रसन्न हूँ। इस उपाख्यान में महर्षि पाराशर ने अश्वपति को गायत्री महामंत्र का महात्म्य बताया है।

देवी भागवत में महर्षि द्वारा सामूहिक गायत्री मंत्र की उपासना के निर्देश तथा उसके प्रतिफल से उस कष्ट निवारण का उल्लेख है।

कदाचिदथ काले तु दशपंचसमा विभो।
प्राणिनां कर्मवशतो नववर्ष शतक्रतुः।।

अनावृष्ट्याऽतिदुर्भिक्षमभवत्क्षयकारकम् ।।
गृहे-गृहे शवानां तु संख्या कर्तु न शक्यते ।।
ब्राह्मणाः बहवस्तत्र विचारं चक्रुः रुत्तमम् ।
तपोधनो गौतमोऽस्ति स नः खेदं हरिष्यति ।।
सर्वेमिलित्वा गंतव्यं गौतमस्याश्रमेऽधुना ।
गायत्रीजपसंसक्तगौतमस्याश्रमेऽधुना ।।
इति सर्वान्समाश्वाय गौतमी मुनिराट् तदा ।
गायत्री प्रार्थयामास भक्तिसन्नद्धचेतसा ।।
पूर्णपात्र ददौ तस्मै येन स्यात्सर्वपोषणम् ।
उवचा मुनि मंबा सा यं कामं त्वमिच्छसि ।।
तस्य पूर्तिकरं पात्रं मया दत्त भविष्यति
इत्युक्तवाऽन्तर्दधे देवो गायत्री परमा कला ।।
अन्नानां राशयस्तस्मात्रिर्गताः पर्वतोपमाः ।
इत्थं द्वादशवर्षाणिपुपोष मुनिपुंगवान् ।।
पुत्रवन्मुनिराड्.गर्वगंधोन परिवर्जितः ।
यत्रसर्वैर्मुनिवरैः पूज्यते जगदम्बिका ।।
त्रिकालं परया भक्त्या पुरश्चरणकर्मभिः ।।

—देवी भागवत

व्यास जी ने जनमेजय से कहा कि एक बार पंद्रह वर्षों तक वर्षा नहीं हुई। इस अनावृष्टि के कारण भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। असंख्य प्राणी भूख से तड़फ कर मर गये। उनकी लाशें पड़ हुई सड़ने लगीं। तब सज्जनों ने इकट्ठे होकर विचार किया कि गायत्री मंत्र के परम उपासक तपोनिष्ठ गौतम ऋषि के पास चलना चाहिये। वे इस विपति को दूर कर सकेंगे। सभी ने गौतम ऋषि के पास जाकर अपना कष्ट सुनाया। गौतम ऋषि ने आगन्तुकों को

सम्मान पूर्वक आश्वासन देकर सर्व-शाक्तिमान गायत्री मंत्र से उस सकंटके निवारण के लिये प्रार्थना की।

गौतम ऋषि ने प्रसन्न होकर गायत्री मंत्र को समस्त प्राणियों का पोषण कर सकने में समर्थ एक पूर्ण पात्र दिया और कहा इसमें तुम्हारी समस्त अभीष्ट कामनाएँ पूर्ण हो जायेगी। यह कह कर उन्होंने गायत्री मंत्र को एक तीर्थ बताया।

देवी भागवत में अनेक ऐसी कथाएँ मिलती हैं जिनमें तथ्य का प्रतिपादन है कि देव, दानव, ऋषि-मुनि, पुरुष और स्त्रियाँ समय-समय पर गायत्री मंत्र का आसन ग्रहण करके दुखों से सुखों की ओर अशान्ति से शान्ति की ओर अग्रसर होने में समर्थ रहे हैं। अनेक, देवी-देवताओं तथा महापुरुषों ने भी अपने अनुभव की चर्चा की है जिससे गायत्री मंत्र की महिमा की महत्ता का प्रतिपादन होता है। ध्रुव कुमार अपना अनुभव सुनाते हुए राजाओं से गायत्री मंत्र का प्रभाव बताते हुए निर्देश करते हैं कि उपासना सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वोपरि है :–

किं ब्रवीमि महिपालाअस्याश्चरितमुत्तमम्।
ब्रह्मादया न जानन्ति सेशाः सुरगणास्तथा।।

गायत्री मंत्र का वर्णन करते हुए ध्रुव कुमार ने राजाओं से कहा कि मैं उस देव के अत्युत्तम चरित्र के विषय में क्या वर्णन करूँ। उसका चरित्र ऐसा अप्रेमय है कि ब्रह्मादि बड़े-बड़े देवगण उसे नहीं जानते हैं।

सर्वस्याद्या महालक्ष्मीवरिण्या शक्ति उत्तम।
सात्विकीयं महीपाला जगपालनतत्परा।।

हे राजन् ! यह गायत्री रूपी देवी परम सात्विकी, सबसे आद्य, महालक्ष्मी, वरेण्या और उत्तम शक्ति स्वरूप है तथा इस संसार के पालन, रक्षण करने में सर्वदा तत्पर रहती है।

सृजते वा रजोरूपा सत्वरूपा च पालने।
सहारे च तमो रूपा त्रिगुणा सा सदा मता।।
निर्गुणा परमा शक्तिः सर्वकाम फल प्रदा।
सर्वेषां कारणं सा हि ब्रह्मादीनां नृपोत्तमाः।।
निर्गुणा सर्वथा ज्ञानतुमशक्या योगिभिर्नृपाः।।

यह गायत्री मंत्र रूपी देवी रजोगुण के स्वरूप वाली इस जगत का सृजन किया करती है। तथा सत्वगुण का स्वरूप धारण करके इसका पालन करती है। जब भी इस प्रपंचात्मक विश्व का संहार करके लय करना चाहती है तो तमोगुण के रूप को धारण कर लेती है। इसके सर्वदा निर्गुण सम्पन्न स्वरूप माने गये हैं। इसके निर्गुण स्वरूप में परम शक्ति है और वह सभी कामनाओं के फल प्रदान करने वाली है। ब्रह्मा आदि सबका यह कारण स्वरूप है। इसका निर्गुणस्वरूप बड़े-बड़े योगियों से भी नहीं जाना गया।

यस्येच्छया सृजति विश्वमिदं प्रजेशो
नानावतारकलनं कुरुते हरिश्च। नूनं करोति जगतः
किल भस्म शमभुस्तां शर्मदां न भजतेनु कथं मनुष्यः।।

गायत्री की इच्छा से प्रजा का स्वामी ब्रह्मा इस सारे विश्व का सृजन करते हैं तथा भगवान हरि अनेक अवतार धारण करते हैं और भगवान शम्भू इस संसार का संहार करके भस्म कर देते हैं। इन सबके होने पर यह मनुष्य है जो इस कल्याणकारिणी का भजन नहीं किया करता है।

भगवान विष्णु ने नारद से कहा था कि गायत्री सर्वोपरि है। उसका आश्रम लेने वाला अशान्तियों से छुटकारा पा सकता है। और आत्मिक तथा भौतिक प्राप्ति का पथ प्रशस्त कर सकता है।

देव देव। महादेव। पुराण पुरुषोत्तम।
जगदाधार सर्वज्ञ ! श्लाघनीयोऽसि सदगुणैः।।

जगतस्तत्वमाद्यंयत्तन्मे वद यथेप्सितम्।
जायते कुत एवेदं कुतश्चेदं प्रतिष्ठितम्।।
कुतन्स्तं प्राप्तनुमः काले कुत्र सर्वफलोदयः।
केन ज्ञातेन मायैषा मोहभूर्नशिमाप्नुयात्।।
कयार्चया किं जपेन किंध्यानेनात्मह्यत्कजे।
प्रकाशो जायते देव तमस्यर्कोदयों यथा।
एतत्पश्नोत्तरं देव ब्रूहि सर्वमशेषतः।
यथा लोकस्तेदन्धतमर्स त्वन्जसैवहि।।

देवर्षि नारद ने नारायण के सामने उपस्थित होकर उनसे पूछा—हे परम देवों के देव। आप तो श्रेष्ठतम एवं परम पुराण पुरुष हैं तथा इस समस्त जगत के आधार और सभी कुछ के ज्ञाता हैं। आप इस जगत के तो आद्य तत्व हो। तो वह मुझे बताइये इसकी उत्पत्ति कहाँ से होती है किसमें यह प्रतिष्ठित है तथा कैसे इसका अंत होता है ? समस्त पुलों का उदय कहाँ से होता है ? किसका ज्ञान प्राप्त कर लेनेपर मोह की भूमि इस माया का नाश होता है ? किस जप, ध्यान, अर्चना से अंधकार में सूर्योदय की भाँति हृदय में प्रकाश होता है ? आप कृपा कर इन मेरे प्रश्नों का उत्तर प्रदान कीजिये।

एवं देवर्षिणा पृष्टः प्राचीनो मुनिसत्तमः।
नारायणी महायोगी प्रतिनन्ध वचोऽव्रवीत।।
श्रृणु देवर्षिवर्यात्र जगतस्तत्वमुत्तमम्।।
येन ज्ञातेन मर्त्योहि जाप न जगत भ्रमे।।
जगत स्तत्वमित्येव देवी प्रोक्ता मयामि हि।
ऋषिभिर्देव गन्धर्वे रन्यैश्चापि मनीषिभिः।।
सा जगत् सृजते देवी तयाच प्रति पाल्यते।

तयया न नाश्यते सर्वमिति प्रोक्तं गुणत्रयात।।
तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि देव्याः सिद्धर्षिं पूजितम्।
स्मरतां सर्वपापघ्न कामदं मोक्षदं तथा।।

गायत्री मंत्र के जप का महत्त्व समझाते हुए पाराशर ने कहा—

"सकृज्जपश्च गायत्र्या पावं दिन कृतं हेरत्।
दशधा प्रजपान्नृणां दिवारात्रधमेवच।।"

गायत्री मंत्र के एक बार जप से दिन में किए हुए पाप तथा दस बार गायत्री मंत्र का उच्चारण करने से अहोरात्र में किए हुए पापों को विनाश हो जाता है।

"शतधा च जपाच्चैंव पापं मासार्जितं परम्।
सहस्रधा जपाच्चैव कल्मषंवत्सरार्जितम।।
लक्ष्य जन्म कृतं पापं दशलक्षं त्रि जन्मनः।
सर्व जन कृतं पापं शतलक्षो विनश्यति।।"

"एक सौ जपों से एक मास के अर्जित पाप, एक सहस्र जाप करने से एक वर्ष के अर्जित पाप, एक लाख जाप करने से एक जन्म के पाप, दस लाख जाप करने से तीन जन्मों के तथा शत लक्ष गायत्री जाप करने से सारे जन्म जन्मान्तरों के पापों का विनाश हो जाता है।

"करोति मुक्ति विप्राणां जपोदश गुण स्ततः।
करं सर्प फणाकारं कृत्वातु ऊद्र्ध्व मुद्रितम्।।

महर्षि पाराशर कहते हैं कि पूर्वाभिमुख होकर हाथ को सर्प फणाकृति की ऊर्ध्व मुद्रा से रखकर किए हुए जप का दस गुणा फल होता है। इस प्रकार के जप के लिये श्वेत कमल के बीजों की अथवा संस्कृत स्फटिकादि की माला प्रशस्त कही गई है। इसके

बारे में महर्षि भद्र देश के सम्राट अश्वपति से कहते हैं :-

"एव क्रमेण राजर्षे दश दस लक्षं जपं कुरु।
साक्षात् द्रक्ष्यसि सावित्री त्रिजन्म पातकक्षयात्।।

हे राजर्षि ! इस क्रम से दस लाख जाप करो। उन जापों के फलस्वरूप तीन जन्मों के पापों का नाश हो जायेगा और तुम साक्षात गायत्री देवी के दर्शन करोगे।

भगवान् विष्णु देवर्षि नारद से कहते हैं :-

"दत्वा सर्व नृपेन्द्राय प्रययौ स्वालयं मुनीः।
राजा सम्पूज्य सावित्री ददर्श वरमाप च।।

इस प्रकार नारद मुनि राजा के लिये सर्वस्व देकर अपने आश्रम को चले गये और सावित्री को पूजकर राजा ने दर्शन और वरदान को प्राप्त किया।

लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर नारद ने विष्णु से पूछा-

"नृपः केन विधानेन संपूज्य श्रुति मातरम्।
वरञ्चकिं वा संप्राप वद सोऽश्वपतिर्नृपः।।

नरेन्द्र अश्वपति ने किस विधान से वेद माता को पूजकर, क्या वरदान प्राप्त किया।

भगवान विष्णु ने देवस्थान षोडसोः प्रचार दूधन, आदि का विधान विस्तारपूर्वक बताया तथा ब्रह्मा द्वारा कृत सावित्री स्तवराज द्वारा संस्तुति आराधना से प्रसन्न होकर सहसर्मसम प्रभावशाली सावित्री के दर्शन दिये।

"आराधनाच्च सावित्र्य बभूव कमला कला।
सावित्रीति च तन्नाम चकाराश्वपति नृपः।।

आदिशक्ति सावित्री की आराधना से नृप दम्पति को प्रथम कन्या रत्न की प्राप्ति हुई। यह कन्या सावित्री की आराधना से प्राप्त हुई थी इसलिये उसका नाम सावित्री रखा।

ब्रह्मदेवत पुराण के 23 के अध्याय को "सावित्री-उपाख्यान" से तीन उद्देश्यों का प्रतिपादन करता है।

(1) "सा च राज्ञीमहासाध्वीवशिष्ठस्योपदेशतः।"
चकाराराधनं भक्त या सावित्र्याश्चैव नारद।।

इस श्लोक से स्पष्ट होता है कि स्त्रियों को गायत्री मंत्र पर पूरा अधिकार है।

(2) दूसरे वह सदा से ऋषि-मुनियों द्वारा समर्पित होता रहा है। वशिष्ठ जी जैसे महर्षि ने स्वयं, अश्वपति की रानी मालती को उपदेश दिया था कि तुम सावित्री की आराधना करो। स्त्रियों को गायत्री मंत्र का अधिकार सदा से है।

(3) साध्वी कन्याभि लाषञ्ज करोति तब कामिनी।
त्वं प्रार्थयसि पुत्रंच भविष्यति कर्मेण ते।।

वेद जननी ने कहा "तेरी पत्नी कन्या चाहती है और तुम पुत्र चाहते हो। अभिलाषा तो दोनों की ही पूर्ण होगी पर क्रम से अर्थात् पहले तेरी स्त्री की अभिलाषा से कन्या रत्न की उत्पत्ति होगी। गायत्री पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों पर शीघ्र प्रसन्न होती है।

नारायण ने नारद जी की जिज्ञासा का आदर करते हुए कहा कि इस जगह का जो उत्तम तत्त्व है उसे मैं बतलाता हूँ। इस जगत् का तत्व गायत्री देवी है और यही अन्य देव, ऋषि, गांधर्व और मनीषियों ने भी बतलाया है। यह गायत्री मंत्र रूपी देवी ही इस जगत् का सृजन करती है और इसी के द्वारा पालन होता है तथा अन्त में नाश भी वही करती है। सिद्ध ऋषियों के द्वारा इस स्वरूप का स्मरण करने वालों के समस्त पापों का क्षय हो जाता है। सारे मनोरथ सफल होकर इससे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

वेद ज्ञान और विज्ञान के उद्गम हैं। उसमें विश्व के सुख-शान्ति और रहस्य छिपे हैं। ब्रह्मा ने वेदों क़ा निर्माण किया और कहा कि तुम पग-पग पर इस गायत्री मंत्र रूपी महाशक्ति का प्रतिपालन करना। गायत्री मंत्र के शीर्ष भाग तथा तीन चरणों को मिलाकर इस महामंत्र के चार खण्ड किये गये हैं और प्रत्येक खण्ड से एक-एक वेद बनाया गया है। वेदों की समस्त ऋचाओं को गायत्री मंत्र की व्याख्या मात्र कहा जाये तो कुछ अत्युक्ति नहीं। गायत्री मंत्र को जानकर और कुछ बनने की इच्छा रखना शेष नहीं रह जाता।

महर्षि व्यास जी ने कहा—इस प्रकार से देवर्षि नारद जी ने जब पुराण पुरुष महायोगी भगवान् नारायण से पूछा तो नारायण ने नारदजी की इस जिज्ञासा का अभिनन्दन करते हुए कहा—हे देवर्षे! इस जगत् का जो उत्तम तत्व है, उसे मैं बतलाता हूँ तुम श्रवण करो। इस तत्व का ज्ञान प्राप्त कर लेने पर मनुष्य को जगत् का भ्रम नहीं रहता। यही अन्य देव, ऋषि, गन्धर्व और मनीषियों ने भी बतलाया है। यह देवी ही इस जगत् का सृजन करती है और उसी के द्वारा इसका पालन होता है और अन्त में नाश भी वही किया करती है।

स्वायम्भुव मनु ने जब कामना की कि उन्हें अपनी गोद में भगवान् जैसा पुत्र खिलाने और सृष्टि आदि का उद्घाटनकर्ता एवं नियम व्यवस्था बनाने का श्रेय प्राप्त हो तो उनकी यह कामना भी माता के सहारे से पूरी हुई। कामना पूर्ति का उपाय जब मनु ने ब्रह्माजी से पूछा तो उन्होंने भगवती का आश्रय लेने का ही निर्देश दिया और उसका पालन करने पर उन्होंने अभीष्ट भी प्राप्त किया—

त्वाद्यः मनुः स्वायम्भुव स्वाद्यापदमपुत्रः प्रतापवान।
शतरूपा पतिः श्रीमान् सर्वमन्वन्तराधिपः।

स मनुः पितंर देवं प्रजापतिमकल्पषम्।।
भक्त्या पर्यचरत्पर्वू तमुवाचात्मभ् सुतम्।।
पुत्र-पुत्र त्वया कार्य देव्याराधनमुत्तमम्।
तत्प्रसादेन ते तात ! प्रजासर्गः प्रसिद्धयति।।

समस्त मनुष्यों के स्वामी शतरूपा के प्रति स्वायम्भुव मनु ने अपने पिता की परिचर्चा की थी। उस समय ब्रह्माजी ने उससे कहा—हे पुत्र ! तुमको देवी की आराधना करनी चाहिए। उसी के प्रसाद से प्रजा का सर्ग करने का तुम्हारा कार्य सफल होगा।

एवमुक्तः प्रजास्ष्टा मनुः स्वायम्भुवो विराट।
जगद्योनिं तदा देवी तपसाऽतर्पयद् विभुः।।
तुष्टाव देवीं देवेर्शीं समाहितमतिः किल।
आद्यां मायां सर्वशक्तिं सर्वकारणकारणाम्।।
नमो नमस्ते देवेशि ! जगत्कारणकारणे।।
शंखचक्रगदाहस्ते ! नारायणहृदाश्रिते।
एव स्तुता भगवती देवी नारायणी परा।
प्रसन्ना प्राह देवर्षि स ! ब्रह्मपुत्रमिदं वचं।।

प्रजा के सृजन करने वाले पितामह के द्वारा इस प्रकार से आदेश दिये जाने पर विराट् स्वायम्भुव मनु ने इस जगत् की समुत्पत्ति करने वाली देवी को उस समय अपनी उत्कृष्ट तपश्चर्या के द्वारा संतृप्त कर दिया था। समाहित बुद्धि वाले मनु ने समस्त देवों की स्वामिनी देवी का स्तवन किया। हे देविशि ! आप सम्पूर्ण शक्ति से सम्पन्न हैं और सब कारणों के भी कारण स्वरूप वाली हैं, अर्थात् जो इस जगत् के कारण हैं उनको भी आपने समुत्पन्न किया है। हे जगत्कारणकारणे ! आद्यमाये ! आपके चरणों में मेरा

प्रणाम है शंख, चक्र और गदा को हाथों में धारण करने वाला और भगवान् नारायण के हृदय में आश्रय ग्रहण करने वाली हैं। मनु के द्वारा स्तुत नारायणी देवी बहुत प्रसन्न हुई और ब्रह्मा के पुत्र स्वायम्भुव मनु से यह वचन बोली—

बरं वरय राजेन्द्र ! ब्रह्म पुत्र ! यदिच्छसि।
प्रसन्नाहं स्तवेनात्र भक्त्या चाराधनेन च।।
यदि देवि ! प्रसन्नाऽसि भक्तया चाराधनेन च।
तदा निर्विध्नतः सृष्टि प्रजायाः स्यात्तवाज्ञया।।
प्रजासर्गः प्रभवुत ममानुग्रहतः किल।
निर्विघ्नेन च राजेन्द्र ! वृद्धिश्चाप्युत्तरोत्तरम्।।
यः कश्चित्पठते स्तोत्रं मद्‌भक्तः त्वकृतं सदा।
तस्य विद्या प्रजा सिद्धिः कीर्ति कान्त्युदयः खलु।।

देवी ने कहा—हे राजेन्द्र ! हे ब्रह्मा के पुत्र ! जो भी तुम चाहते हो वरदान माँग लो ! तुम्हारे इस स्तवन और आराधना से मैं प्रसन्न हूँ। मनु ने कहा—यदि आप मुझ पर करुणा कर प्रसन्न हैं तो मैं यही चाहता हूँ कि प्रजा की सृष्टि निर्विघ्न होवे। देवी ने कहा हे राजेन्द्र ! तेरी सृष्टि की उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। मेरा यह स्तवन जो भी कोई पढ़ेगा उसकी भी विद्या और प्रजा की तथा कीर्ति सिद्धि होगी।

सत सावित्री द्वारा अपने पति के प्राण वापस लाने की कथा प्रसिद्ध है। अपने पति सत्यवान के प्राण जब उसने अपने तप-बल द्वारा यमराज से वापस ले लिये। यमराज ने भगवती महाशक्ति की महिमा बताई और कहा—"जो निष्ठापूर्वक उसकी उपासना करते हैं और तपश्चर्या द्वारा अपने जीवन को आत्म-शक्ति सम्पन्न बनाते हैं, उन्हें नरक की पीड़ा सहन करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

क्रुन्डानि यमदूतैश्च रक्षितानि सदा शुभे।
नहि पश्यन्ति स्वप्ने च पञ्च देवार्चका नराः।।
देवी भक्ति विहीना ये ते पश्यन्ति ममालयम्।
यान्ति ये हरितीयम्बाश्रयन्ति हरि वासरम्।।
प्रणमन्ति हरि नित्यं हर्यर्चां कलयन्ति च।
न यान्ति तेऽपि घोरां च ममसंयमिनी पुरीम्।।
त्रिसन्धिपूतः विप्राश्च शुद्धाचार समन्विताः।
निवृत्तिं नैव लप्स्यन्ति देवी सेवां बिना नराः।।

सति सावित्री ने जब धर्मराज से कर्मबन्धनिकृन्तन के सम्बन्ध में प्रश्न किये तो धर्मराज ने सावित्री को उत्तर देते हुए कहा—'हे शुभे ! मेरे दूतों के द्वारा कुण्ड सुरक्षित रहा करते हैं किन्तु जो पंच देवों में किसी भी एक देव की उपासना किया करते हैं, वे मनुष्य स्वप्न में भी उन कुण्डों को अर्थात् नरकों को कभी भी नहीं देखते हैं। जो पुरुष देवी की भक्ति से हीन होते हैं वे ही मेरे पुर को देखते हैं। जो मनुष्य हरि के तीर्थों का अटन करते हैं या हरिवासर का आश्रय लेते हैं एवं हरि को नित्य प्रणाम करते हैं तथा हरि का अर्चन किया करते हैं, वे मनुष्य भी मेरी महाघोर संयमनीपुरी में नहीं जाया करते हैं। त्रिकाल में संध्या-वन्दना करने से पवित्र एवं शुद्ध आचार से युक्त रहने वाले भी देवी की सेवा के बिना, निवृत्ति की प्राप्ति नहीं किया करते हैं।

देयी मन्त्रो पासकानां नाम्नाञ्चैव निकृन्तनम्।
करोति नख लेखन्या चित्रगुप्तश्च भीतवत्।।
मधुयर्कादिकं तेषां कुरुसुते च पुनः पुनः।।
विलंघड्य ब्रह्म लोकं च लोकं गच्छन्ति ते सति।।
दुरितानि च नश्यन्ति येषां संस्पर्श मात्रतः।
ते महाभाग्य वन्तो हि सहस्त कुल पवनाः।।

धर्मराज ने कहा—हे सती ! जो पुरुष देवी के मंत्र की उपासना करने वाले हैं, उनके तो नाम से ही कर्म-बन्ध का निकृन्तन हो जाता है और चित्रगुप्त बहुत डरा-सा होकर नख की लेखनी से उनके कर्मबन्ध को काट दिया करता है। जब वे ब्रह्मलोक का लंघन कर लोक को जाते हैं तो चित्रगुप्त उनके लिये बारम्बार मधुपर्क आदि का उपचार किया जाता है। उनके स्पर्शमात्र से ही पापों का नाश हो जाता है। ऐसे पुरुष महान् भाग्यशाली हैं और सहस्त्र कुल का उद्धार करने वाले होते हैं।

देवी-भक्तिं देहि मह्यं साराणां चैव सारकम्।
पुंसी मुक्ति द्वार बीजं नरकार्णव तारकम्।।
कारणं मुक्ति साराणां सर्वाशुभ विनाशतम्।
दारकं कर्म्म वृक्षाणां कृत पायौघ गुहारणम्।।
तत्त्व ज्ञान विहीना च स्त्री जातिर्विधि—निर्मिता।
किञ्चिज्ज्ञानं सारभूतं वद वेदविदांवर !
सर्व दानं च यज्ञश्च तीर्थस्नानं व्रतं तपः।
अज्ञानि ज्ञान दानस्य कलां नार्दन्ति षोडशीम्।
पितुः शतगुणा माता गौरये चेति निश्चितम्।
मातुः शत गुणः पूज्यो ज्ञानदाता गुरुः प्रभो।।

सती सावित्री ने धर्मराज से कहा—मुझे और कृपा करके देवी की भक्ति प्रदान कीजिये, जो समस्त सार वस्तुओं का भी सार स्वरूप है। देवी की भक्ति मनुष्यों के लिये मुक्ति प्राप्त करने का द्वार एवं बीज है और इसके द्वारा नरकों को घोर सागर से मनुष्य पार हो जाया करता है। यह मुक्तिप्रद सारों का भी कारण है और इस देवी की भक्ति से सभी प्रकार के अशुभों का नाश हो जाता है। यह कर्मों के वृक्षों का विहारण करने वाला है तथा किये हुये पापों के समूह का नाशक है। सावित्री ने धर्मराज से कहा—

विधाता ने हमारी सती जाति को तत्त्व-ज्ञान से विहीन बनाया है। अतः हे वेदों के वेत्ताओं में परम श्रेष्ठ देव ! जो कुछ सारभूत ज्ञान हो उसे ही बतला देवें। सब प्रकार के दान, यज्ञ, तीर्थस्थान, व्रत और तप ये सब अज्ञानी को ज्ञान का दान करने की सोलहवीं कला को भी प्राप्त नहीं हो सकते हैं। पिता से माता का सौ गुना अधिक गौरव होता है, किन्तु माता से भी सौ गुना ज्ञान के प्रदान करने वाले गुरु का गौरव होता है।

श्रोतुमिच्छसि कल्याणि ! श्री देवी-गुण कीर्त्तनम्।
नक्तणां पृच्छ कानाञ्च श्र तृष्णां कुल तारणम्।।
न यद्वक्तुं क्षमाः सिद्ध मुनीन्द्रा योगिन स्तथा।
के चान्ये च वयं केवा श्रीदेव्या गुण वर्णने।।
ध्यामन्ते यत्यदाम्भोजं ब्रह्म, विष्णु शिवादयः।

धर्मराज ने सती सावित्री से कहा— हे कल्याणि ! श्री देवी के गुणों, कीर्तन, वक्ता, श्रोता और पूछने वालों के फलों को तारने वाला है। देवी के गुणों का कीर्तन सिद्ध-मुनीन्द्र और योगी भी कहने में समर्थ नहीं हैं। दूसरे और हम तो क्या हैं। ब्रह्मा, विष्णु और शिवादि भी उसके चरण कमल का ध्यान करते हैं।

एक बार नागाधिराज हिमिवान ने भगवती से उनके स्वरूप, वैभव एवं उपास्य साधन के बारे में प्रश्न किया तो भगवती ने उन्हें स्वयं बताया कि उनकी शक्ति समार्थ्य का क्षेत्र कितना व्यापक है और किस मनोभूमि के व्यक्ति उनके अनुग्रह को प्राप्त कर सकते हैं।

इस वर्णन में उन्होंने साधक की उत्कृष्ट मनोभूमि, उज्जवल चरित्र और भक्ति-भावपूर्ण अन्तःकरण की आवश्यकता विशेष रूप से बताई है। जप, ध्यान, स्तवन और पूजा विधान के कर्मकाण्ड तो आसानी से किये जाते हैं पर इतने से ही काम नहीं चलता। साधक का अन्तःकरण जितना निर्मल और चरित्र जितना उज्जवल

होगा, उसी अनुपात से उसे दिव्य अनुग्रह भी उपलब्ध होगा।

स्वीयां भक्तिं वदस्वाम्वा येन ज्ञानं सुखेन हि।
जायेत मनुजस्यास्य मध्यमस्याविरागिणः।।
मार्गासजयो मे विख्याता मोक्ष प्राप्तौ नगाधिप।
कर्म्म योगो ज्ञान योगो भक्ति योगश्च सत्तम।।
गुणभेदान्मनुष्याणां सा भक्ति स्त्रिविधामता।
पर पीड़ां समुद्दिश्य दम्भं कृत्वा पुरः सरम्।।
मात्सर्य क्रोध युक्तो यस्तस्थ भक्ति स्तुतमसी।
पर पीड़ादि रहितः स्वकल्याणार्थ मेव च।।
नित्य सकामो हृदयं यशोऽर्थी भोग लोलुपः।
तत्तत्फलसमावाप्त्यै मामुपास्तेऽति भक्तितः।।
भेद बुद्धचर तु मां स्वस्मादन्यांजानाति पामरः।
तस्य भक्तिः समाख्याता नगाधिप तु राजसी।
परमेशार्यणं कर्म्म पाप संक्षाल नाय च।
वेदोक्तत्वाध्वश्यं तत्कर्त्तव्यं तु मया निशम्।।
इति निश्चित बुद्धिस्तु भेद बुद्धि मुपाश्रितः।
करोति प्रीतये कर्म भक्तिः सा नग सात्विकी।

नागराज ने एक बार जगत्जननी देवी से पूछा—हे समस्त संसार की माता ! आप कृपा कर मुझे अपनी भक्ति के विषय में बताइये जिसके करने से विरागरहित मध्यम श्रेणी के मनुष्य को सुखपूर्वक ज्ञान की उत्पत्ति हो जावे। नागाधिराज हिमवान् के इस जिज्ञासापूर्ण प्रश्न को सुनकर भगवती ने कहा—मेरी उपासना करने के तीन मार्ग सुविख्यात हैं। हे नागाधिप ! इन तीनों मार्गों से ही मेरी आराधनोपासना करने पर मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। हे सत्तम! वे तीन मार्ग कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग इन तीन नामों से

प्रसिद्ध हैं। गुणों के भेद होने से वह मनुष्यों के द्वारा की हुई भक्ति भी तीन प्रकार की होती है। दूसरे को पीड़ा पहुँचाने के उद्देश्य से मात्सर्य और क्रोध से युक्त होकर जो कोई मनुष्य मेरी भक्ति किया करता है, वह उसकी भक्ति तामसी कही जाती है, क्योंकि उसमें तमोगुण की प्रधानता रहती है। दूसरों को पीड़ा देने की भावना से रहित होकर केवल अपने ही कल्याण करने की कामना वाला, यश प्राप्त करने का इच्छुक एवं भोगों के भोगने का लालसी मनुष्य अपने समुद्दिदष्ट फलों की प्राप्ति के लिये जो भक्तिपूर्वक मेरी उपासना किया करता है और भेद की बुद्धि से मुझे वह मनुष्य अपने से अन्य ही समझता है। हे नागाधिराज ! उसकी भक्ति राजसी कही गई है, क्योंकि इस प्रकार की भक्ति और आराधना में रजोगुण की प्रधानता विद्यमान रहा करती है, क्यों सर्वदा अपने सुखोपभोग प्राप्त करने की ही भावना इस उपासना का एकमात्र लक्ष्य होता है। जो कर्म परात्पर के निमित्त किया जाता है, अर्थात् उसका कोई भी फल अपने लिये न चाहकर जो कुछ भी हो वह सब अपने आराध्य के ही चरणों में समर्पित कर दिया जावे और केवल पापों के प्रक्षालन होने से अपनी आत्मशुद्धि की भावना रहे और उपासना करने वाले के हृदय में ऐसी निष्ठा बनी रहे कि यह वेदोक्त विधान का करना मेरा परम कर्त्तव्य है, अतएव मुझे यह अनवरत करना ही चाहिये—ऐसी बुद्धि के द्वारा भेद बुद्धि का उपाश्रय करके देव की प्रत्यार्थ जो कर्म अर्थात् आराधना की जाती है, जिसमें एक प्रकार का हृदय सुदृढ़ निश्चय बना रहता है, उस देव भक्ति को सात्त्विक कहा जाता है, क्योंकि इसमें सतोगुण की प्रधानता रहती है और केवल अपने समाराध्य की प्रीति के लिये ही यह कर्त्तव्य कर्म समझ कर की जाती है और इसके द्वारा अपनी आत्म शुद्धि ईष्टदेव की कृपा से हो जाने की भावना सुदृढ़ रहती है।

राजा जन्मेजय के प्रश्न और भगवान् व्यास के उत्तर के रूप में

प्रस्तुत एक संवाद यह प्रतिपादन करता है कि कलियुग के प्रभाव और उसके दुष्परिणामों से बचे रहने के लिये भगवती महाशक्ति का आश्रय लेना सर्वोत्तम है। उनकी शरण में जाने वाले की अन्तःप्रेरणा उसे दुष्कर्मों से और दुष्ट भावनाओं से बचाती है, फलतः वह उन बाह्य एवं आन्तरिक यातनाओं से भी बच जाता है, जो कलियुग के कुपथगामी मनुष्यों को निरन्तर मिलती रहती है।

भगवन् ! सर्वधर्मज्ञ ! सर्वशास्त्र विशारदा
कलाव धर्मबहुले नराणां का गतिर्भवेत् ?।।
यद्यस्ति तदुपायश्चेद्दययां त वदस्व मे।
एकएव महाराज तत्रोपायस्तु नायरः।।
सर्व दोष निरासार्थं ध्यायेद्देवी पदाम्बुजम्।
म सन्त्यघामि तावन्ति मावती शक्तिरस्ति हि।।

महर्षि वेदव्यास जी से राजा जन्मेजय युग धर्म के समय में सद्गति का उपाय पूछते हुए कहते हैं—हे सम्पूर्ण धर्म के तत्त्व के ज्ञाता और समस्त शास्त्रों के महामनीषी ! इस अधर्म से परिपूर्ण इस घोर कलियुग में मनुष्यों की गति कैसे होगी, यदि इसका कोई उपाय हो तो आप कृपा करके बतलायें। व्यास महर्षि ने कहा—इसका केवल एक ही उपाय है, दूसरा कोई नहीं है। कलि में समस्त दोषों के विनाश करने के लिये देवी के चरण कमलों का ध्यान करना चाहिये। उतनी पापों में सामर्थ्य नहीं है, जितनी देवी की शक्ति होती है।

स्मृता सम्पूजिता भक्ता ध्याता चोच्चारिता स्तुता।
ददाति वाञ्चिछतानर्थान्कामदा तेन कीर्त्यते।।
समाराधिता च तथा नृभिरेभिः सदाऽम्बिका।
यतोऽमी सुखिनः सर्वे संसारेऽस्मिन्न संशयः।।
इति राजञ्चद्‌्रुंत तत्रमया मुनिसमागमे।

लोमशस्य मुखात्कामं देवी माहात्म्य मुत्तमम्।
इति सञ्चिन्त्ये राजेन्द्र कर्त्तव्यं च सदार्चनम्।
भक्तया परमया देव्याः प्रीत्या च पुरुषर्षभ।।

सत्यव्रत के आख्यान में देवी की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है—भगवती के स्मरण से वह स्वपूजित, भक्तिभाव से ध्यान की हुई, मुख से उच्चारण किये जाने पर और स्तुत होती हुई मानवों के सभी इच्छित मनोरथों को प्रदान कर देती है। इसीलिये उसका 'कामदा'—यह नाम कहा जाता है। मनुष्यों के द्वारा सदा समाराधित वह देवी होती है, इसलिये इस संसार में सब सुखी हैं, इसमें संशय नहीं है। व्यास ने कहा—हे राजन् ! मैंने लोमश के मुख से देवी का माहात्म्य सुना है अतः प्रेम-भक्ति से देवी का सदा अर्चन करना चाहिये।

पिछला जीवन कुमार्गगामी भी रहा हो तो इस महाशक्ति का आश्रय लेने वाला एक दिव्य प्रकाश से अपने अन्तःकरण को त्याग कर धर्मपथ का अनुगामी बनकर अपना लोक-परलोक सुधारता है।

महर्षि वाल्मीकि का प्रसङ्ग ऐसा ही है, वे जीवन के प्रथम चरण में डाकू थे पर जब वे आत्म-कल्याण की उपासना में प्रवृत्त हुए तो सारे दोष-दुर्गुणों से छुटकारा पाकर ऋषि जीवन बिताने लगे और जीवन की पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त कर सकने में समर्थ हुये।

बीजोच्चारण तो देव्या विद्या प्रस्फुरिताऽखिला।
बाल्मीकेश्चय यथा पूर्व तथा स ह्युभवत्कविः।।

सावित्री भगवती के केवल बीज मात्र के उच्चारण करने से वाल्मीकि की समस्त विद्यायें प्रस्फुरित हो गई थीं और सर्वप्रथम महान् कवि हो गये थे।

भगवती महाशक्ति गायत्री यह नहीं देखती कि साधक का पिछला जीवन कैसा रहा है, इस आधार पर वे किसी से घृणा भी

नहीं करतीं। शरण में आने वाले को वे दिव्य प्रकाश देती हैं और उसे सन्मार्गगामी प्रेरणा देकर सच्ची सुख-शांति का अधिकारी बना देती हैं—

न वैषम्यं न नैर्घृण्यं भगवत्यां कदाचन।
केवलं जीव मोक्षार्थ यतते भुवनेश्वरी।।

भगवती गायत्री में कोई भी विषमता का भाव नहीं रहता है, अर्थात् वह सबको समान भाव से ही देखती है और उसमें किसी से भी घृणा नहीं होती है। वह इस सम्पूर्ण भुवन की स्वामिनी केवल जीवों के कल्याण के लिये ही सदा यत्न करती है।

भौतिक जीवन की सुख-समृद्धि और आध्यात्मिक जीवन की शांति सद्गति का उन्हें अधिकार मिलता है, जो सच्चे मन से, वचन और कर्म से माता की शरण में जाते हैं और उनके निर्देश अनुरूप जीवन क्रम का निर्धारण करते हैं।

यदज्ञानाद्भवोत्पत्ति यैज्ज्ञानाद्भव नाशनम्।
सं विद्रूपां च तां देवी समरामः साप्रचोदयात्।।

जिस गायत्री देवी के ज्ञान न होने से इस संसार में उत्पत्ति हुआ करती है अर्थात् यह मानव संसार के जन्म-मरण रूपी बन्धन का दुःख निरन्तर भोगता रहा करता है और जब भगवती गायत्री देवी का ज्ञान हो जाता है तो फिर इस संसार के आवागमन रूपी दुःख का नाश हो जाता है। हम उस सवित्वरूपिणी देवी का सदा-सर्वदा स्मरण करते हैं। वह भगवती हमको सत्प्रेरणा प्रदान करती है।

इतिहास, पुराणों में ऐसे कथानक भरे पड़े हैं। जिनमें बताया गया है कि देव शक्तियों ने संकट एवं निराशा की घड़ियों में गायत्री मंत्र का आश्रय लिया और उसकी सहायता से आपत्तियों के निवारण में सफल हुए। देवी, आसुरी शक्तियों का युद्ध संघर्ष का क्रम चिरकाल से चला आ रहा है।

देवाधिराज इन्द्र को पराजित स्थिति से उबरकर विजयी बनाने

में समय-समय पर गायत्री मंत्र का योगदान रहा है। ऋषियों, महापुरुषों एवं सामान्य मनुष्यों ने इस शक्ति के आधार पर कैसे पराजित स्थिति से छुटकारा पाकर विजयी बनने में सफलता पाई है, इसके कुछ प्रसंग नीचे देखिये—

मातः प्रसीद सुमुखी भव दीनसत्वां स्त्रायस्व दनो जननि दैत्य पराजितान्यै। त्वं देवि नः शरणदा भुवने प्रमाणा शक्तासि दुःख शमनेऽखिल वीर्ययुक्ते। ध्यायन्ति येऽपि सुखिनो नितरां भवन्ति। दुःखान्विता विगत शोकभयास्तथान्ये मोक्षार्थिनो विगतमानविमुक्त सङ्गाः संसार वारिधजलं प्रतरन्ति संतः। त्वं देवि विश्व जननि प्रथित प्रभावा संरक्षणार्थ समुदिताऽऽर्त्ति हर प्रतापा।

इन्द्रादि देवगण सावित्री देवी का स्तवन करते हुए कहते हैं—हे माता ! आप प्रसन्न होइये और सुमुखी अर्थात् प्रसन्न मुख वाली होकर कृपा कीजिये। हे जननी ! हम हीन सत्त्व वालों की आप रक्षा कीजिये, जिन हम लोगों को दुष्ट दैत्य गण अहर्निश पराजित करने की चेष्टा किया करते हैं। हे देवि ! आप लोक में शरण में आये हुओं की सुरक्षा करने वाली प्रसिद्ध हैं और आप समस्त प्रकार के दुःखों के शमन करने में पूर्ण समर्थ हैं। आप परिपूर्ण पराक्रम से युक्त हैं। जो भी कोई आपका ध्यान किया करते हैं, वे अत्यन्त सुखी हो जाते हैं। जो भी कोई दुःखों से युक्त होते हैं, वे आपकी कृपा से शोक और भय से छुटकारा पा जाया करते हैं। जो मोक्ष की इच्छा रखने वाले हैं, वे मान और संग से रहित होकर सन्त पुरुष आपके प्रसाद से इस संसार रूपी समुद्र के जल को पार कर जाते हैं। हे देवि ! आप इस सम्पूर्णविश्व की माता हैं। आपका यह प्रभाव सर्वत्र प्रसिद्ध है कि आप दुःखियों के संरक्षण करने के लिये ही प्रकट हुई हैं और आपका प्रताप समस्त दुःखों को मिटा देने वाला है।

ॐ
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

त्वत्तः सर्वमिदं विश्वं स्थावरं जङ्गम तथा। अन्ये निमित्त मात्रा स्ते कर्तारस्तव निर्मिताः।

हे देव ! यह सम्पूर्ण चराचर विश्व आपसे ही समुत्पन्न हुआ है। अन्य ब्रह्मादि जो इसके कर्त्ता हैं, वे तो केवल इसके निमित्त ही हैं, क्योंकि उनको भी आपने ही बनाया है।

सहत्तुं मेतदखिलं किल काल रूपा कोवेत्ति तेऽम्ब चरित्व तेनु मन्द बुद्धिः। ब्रह्मा हरश्च हरिश्च रथो हरिश्च इन्द्रो यमोऽया वरुणोऽग्नि समीरणौच। सातुं क्षमान् मनुयोऽपि महानुभावा यस्याः प्रभावमतुलं निगमानगमाश्च। धन्यास्त एवं तव भक्तिपरा महान्तः संसारदुःख रहिता सुख सिन्धु माताः।

हे देवि ! इस सम्पूर्ण विश्व का जब आप संहार करना चाहती हैं तो आप ही का स्वरूप काल रूप वाला बन जाया करता है। हे अम्ब ! मन्द-बुद्धि वाला कौन आपके चरित्र को समझ सकता है, जबकि ब्रह्मा, विष्णु, हरि, इन्द्र, यम, वरुण, अग्नि, वायु ये सब भी आपके इस परम अद्‌भुत चरित्र के जानने में समर्थ नहीं होते हैं। महानुभाव, मुनिगण, ऋषि निगम और सागम भी जिस आपके अतुल प्रभाव को नहीं समझते हैं। वे पुरुष परम धन्य हैं, जो आपकी भक्ति में परायण हैं और महान् हैं। आपके भक्तगण इस संसार के दुःख से रहित होकर सदा सुख के सागर में मगन रहा करते हैं। आपकी भक्ति का ऐसा अद्‌भुत प्रभाव है।

देवोद्याने पराशक्तेः प्रासादमकरोद्धकरिः।
पद्‌मरागमयी मूर्ति स्थापयामास वासवः।।
त्रिकालं महतीं पूजां चक्रुः सर्वेऽपि निर्जराः।
तदा प्रभृति देवानां श्री देवी कुल दैवतम्।।

विष्णु च त्रिभुवन श्रेष्ठ पूजया मास वासवः।
ततो हते महावीर्ये वृत्रे देव भयङ्करे।।

इसके अनन्तर इन्द्र ने देवोद्यान में पराशक्ति देवी का एक परम सुन्दर प्रासाद का निर्माण कराया था और उसमें एक पदराग मणि की प्रतिमा को निर्मित करा कर संस्थापित किया था। वहाँ पर उस देवी की समस्त देवंगण तीनों काल में महती अर्चना किया करते थे। उसी समय से देवताओं की श्री देवी कुल देवता मानी जानी लगी थी। उस महान् भयङ्कर शत्रु देवगण को त्रास देने वाले अत्यन्त पराक्रमी वृत्रासुर के वध हो जाने पर इन्द्र ने त्रिभुवन में श्रेष्ठ भगवान् विष्णु का भी पूजन किया था।

पूर्व मदोद्धता दैत्या देवैर्युद्धंतु चकिरे।
शतवर्ष महाराज महाविस्मय कारकम्।।
पराशक्ति कृपानेशात् देवै दैत्या जितायुधि।
ततः प्रहर्षिता देवाः स्वपराक्रम वर्णनम्।।
चक्रुः परस्परं मोहात्साभि माताः समन्ततः।
परोशक्ति प्रभावं ते स्वत्वा मोहभाग ताः।।
तेषा मनुग्रहं कर्तु तदैव जगदम्बिका।
प्रादुरासीत् कृपा पूर्णा यज्ञ रूपेण भूमिव।
कोटि सूर्य प्रतीकाशं चन्द्र कोदि सुशीतलम्।
विद्युत्कोटि समानाभ हस्त पादादि वर्जितम्।।
अदृष्ट पूर्व तद् दृष्ट्वा तेजः परम सुन्दरम्।।
सविस्मया स्तदा प्रोचः किमिदं किमिदं विति।।

प्राचीन काल में मद से उद्यत दैत्यों ने देवताओं के साथ युद्ध किया था। वह महाघोर सौ वर्ष तक महान् विस्मय उत्पन्न करने वाला युद्ध हुआ था। उस समय पराशक्ति की कृपा के आवेश से ही देवंगण ने युद्ध में दैत्यों को पराजित किया था। विजय होने पर

देवगण अत्यन्त प्रसन्न हुए और परस्पर में अपने बल-पराक्रम की प्रशंसा का वर्णन करने लगे। पराशक्ति के प्रभाव का ज्ञान प्राप्त न कर मोह से अभिमानपूर्वक सभी ओर अपने बल की शेखी मारते बघारते थे। उन देवताओं पर कृपा करने के लिये जगत् जननी ने उसी समय में अपना प्रादुर्भाव किया था। भगवती कृपा से परिपूर्ण स्वरूप वाली थीं। हे राजन् ! उसने एक यक्ष के रूप में देवी को दर्शन दिया था। उस समय करोड़ों सूर्यों के तुल्य उसका तेज था, किन्तु करोड़ों चन्द्रों के सदृश्य वह तेज शीतल भी था। करोड़ों विद्युत् के समान देदीप्यमान् वह तेज हस्तपाद आदि से रहित था। ऐसे दिव्यातिदिव्य तेज को देवों ने पहले कभी भी नहीं देखा था, जो कि बहुत ही अधिक सुन्दर भी था। तब तो देवता आश्चर्य से भर गये और कहने लगे कि वह क्या वस्तु है ?

इत्यं निश्चित्य तत्रैव गर्वहित्वा सुरेश्वरः।
चरित्र मीदृश यस्थ तमेव शरणंगतः।।
तस्मिन्मेव क्षणे जाता व्योम वाणी नभस्तले।
मायाबीजं सहस्त्राक्ष जप तेन सुखी भव।।
ततो जजाद्य परमं माया बीजं परात्परम्।
तदेवाविरभूत्तेज स्तस्मिन्नेव स्थले पुनः।।
प्रेमाश्रु पूर्ण नयनो रोमाञ्चित तनुस्ततः।
दण्डवत्प्रणनामाथ पादयोजगदीश तुः।।
तुष्टाव विविधैः स्तोत्रैर्भक्ति सम्मत कन्धरः।
उवाच परम प्रीतः किमिहं यक्षमित्यणि।।
प्रादुर्भूतं च कस्मात्तहृद सर्व सुशोभने।
इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रोवाच करुणार्णवा।
मत्प्रसादूभवभिस्तु जयोलब्धोऽस्ति सर्वथा।

ॐ
भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः
प्रचोदयात्।

अनुग्रहं ततः कर्त्तुयुष्मद्देहानुज्ञमम् ।।
निःसृतं सहसा तेजो मदीपं यक्षमित्यपि।

सुरेश्वर ने मन में विचार किया कि मुझे अब इसकी ही शरण में जाना चाहिये, अन्य कोई भी चारा नहीं है। ऐसा निश्चय करके वहाँ पर ही अपने गर्व को परित्याग करके सुरेश्वर इन्द्र ने जिसका ऐसा अद्‌भुत चरित्र है, उसी की शरणागति प्राप्त हो गया था। उसी क्षण आकाश में, आकाशवाणी उत्पन्न हुई थी—"हे इन्द्र ! तुम माया बीज का जाप करो। इसी से तुमको सुख प्राप्त होगा। इसके अनन्तर इन्द्र ने परात्पर जो माया बीज है, उसका जप किया था। अचानक ही उसी स्थल में वही तेज पुनः आविर्भूत हुआ था। उस परम दिव्यातिदिव्य तेज को देखकर इन्द्र के नेत्रों से प्रेमाश्रुओं का पात होने लगा और उसकी सम्पूर्ण देह पुलकित हो गई थी। उस जगदीश्वरी के चरणों में इन्द्र ने दण्डवत्प्रणाम किया था। भक्तिभाव से अपनी कन्धरा को नत करके अनेक स्रोतों के द्वारा उसका सत्वन किया था। इन्द्र ने प्रार्थना की कि हे सुशोभने ! कृपा कर यह बताइये यह यक्ष स्वरूप क्या है, जोकि प्रादुर्भूत हुआ है और इसका क्या कारण है ? इन्द्र के इस वचन का श्रवण कर अतिशय करुणा से पूर्ण भगवती ने कहा—"तुम्हारा जो दैत्यों से युद्ध हो रहा था, उसमें विजय मेरी ही कृपा से तुमको प्राप्त हुई है। मैं तुम्हारे ऊपर अनुग्रह करते हुए, तुम्हारे देह से ही यह मेरा तेज सहसा यक्ष स्वरूप वाला निकला है।

अतः परं सर्वभावै हित्वा गर्वतु देहजम्।
मामेव शरणं यात सच्चिदानन्द रूपिणीम् ।।
इत्युक्त्वा च महादेवी मूल प्रकृति रीश्वरी।
अन्धर्घानं गता सद्यो भक्तया देवै रभिष्टुता ।।
ततः सर्वे स्वगर्वतु विहाय पदपङ्कजम्।
सम्यगाराधग्रामासु भंगवतयाः परात्परम् ।।

त्रिसन्ध्यं सर्वदा सर्वे गायत्री जप तत्पराः।
यज्ञ भागादिभिः सर्वे देवीं नित्यं सिषेविरै।।

भगवती ने इन्द्र से कहा—"इसलिये सर्वभावों से देह में उत्पन्न होने वाले अभिमान का त्याग करके परम सच्चिदानन्द स्वरूप वाली मेरी ही शरण ग्रहण करो अर्थात् केवल मेरी उपासना करो!" इतना कहकर मूल प्रकृति ईश्वरी महादेवी अन्तर्ध्यान हो गई। देवगण के द्वारा भक्तिभाव से उसकी स्तुति की थी। इसके अनन्तर समस्त देवों ने अपने गर्व का त्याग करके परस्पर भगवती के चरण कमल की आराधना की थी। सब लोग सर्वदा तीनों कालों में गायत्री में जप करने में तत्पर हो गये थे। सभी यज्ञ के भागों आदि के द्वारा नित्य देवी की सेवासाधना करने लगे थे।

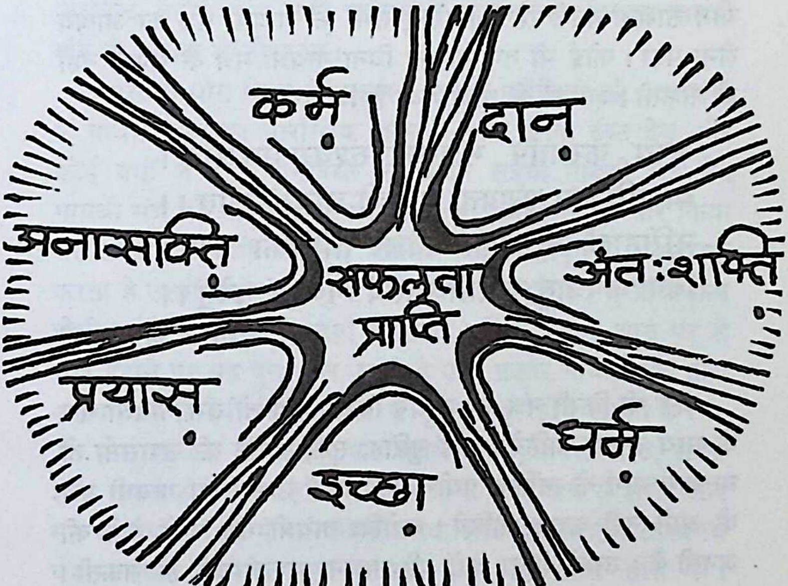

गायत्री मंत्र द्वारा योग साधना

संसार में आदिकाल से जिन संत-महात्माओं ने तपस्या और योग साधना की है उन्होंने गायत्री मंत्र को आधार माना है। सभी आध्यात्मिक तत्त्वों की कुंजी गायत्री मंत्र है। बिना इसके आत्म-सिद्धि का ताला नहीं खुल सकता। बहुत से लोग ऋषि-मुनियों को ईष्ट मानकर और उन्हें प्रसन्न करके शक्ति प्राप्त करने के लिये योग साधना करते रहे हैं। परन्तु सभी को गायत्री मंत्र का आश्रय लैना पड़ा। कोई भी तप साधना बिना गायत्री मंत्र के सफल नहीं हो सकती। शास्त्रों में कहा गया है कि—

अस्य कस्यापि मंत्रस्य पुरुश्चरणमारभेत्।
व्याहृति त्रय संयुक्ता गायत्री चायुतं जपेत।।
नृसिंहार्क बराह्मणां कौला तांत्रिका तथा।
बिना जप्त्रातु गायत्री सत्सर्व निष्फलं भवेत्।।

—शास्त्र का वचन है

जब भी किसी मंत्र का साधन किया जाये तो उसे गायत्री मंत्र के साथ जपना चाहिये। चाहे नृसिंह, सूर्य, वाराह की उपासना हो या वाम मार्ग के तांत्रिक प्रयोग किए जायें उन्हें बिना गायत्री मंत्र के आगे नहीं करना चाहिये। क्योंकि गायत्री मंत्र चारों वेदों की जननी है। उसके बिना वेदों की साधना सफल नहीं हो सकती।

क्योंकि तांत्रिक, कौल, अवधूत, कापालिक, अघोर आदि वाम मार्ग में जिस शक्ति की आवश्यकता पड़ती है उसका उद्गम गायत्री मंत्र से है।

बिना गायत्री मंत्र के जो लोग सिद्धि करते हैं वे क्षणिक चमत्कार दिखाकर शक्तिहीन हो जाते हैं। गायत्री मंत्र से रहित मंत्र चिरस्थायी नहीं होते।

गीता में भगवान ने स्वयं कहा है—"गायत्री छंद सामहम" अर्थात्—गायत्री मैं ही हूँ। भगवान की उपासना के लिये गायत्री मंत्र से बड़ा और कोई मंत्र नहीं है। गायत्री मंत्र का आश्रय लेकर ही वे इतने प्रतिभा सम्पन्न महापुरुष बन सके। शंकराचार्य, गुरु रामदास, नरसी महता, दादू दयाल, संत ज्ञानेश्वर, स्वामी रामानन्द, गोरखनाथ मद्रीन्दनाथ, हरिदास, तुलसीदास, रामानुजाचार्य, माधवाचार्य, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, रामतीर्थ, योगी अरविन्द, महर्षि रमण आदि महात्माओं का आत्मिक विकास गायत्री मंत्र के अंचल में ही हुआ।

भारतीय योग विद्या और शास्त्र धर्म से परिचितों की आराधना में गायत्री मंत्र का प्रारम्भिक ज्ञान है चाहे उसके ईष्ट देव और कोई क्यों न हों। योगविद्या की प्रथम सड़क गायत्री मंत्र है। गायत्री मंत्र की नौका पर सवार होकर ही भवसागर को पार किया जा सकता है। जो भी इस महामंत्र का श्रद्धापूर्वक अवलम्बन करता है उसमें सतोगुणी, गुण, कर्म स्वभाव बढ़ते हैं। बुराईयाँ कम होती जाती हैं और उत्तमताएँ बढ़ती हैं। जिस प्रकार आग पर से राख हटाने पर वह पुनः जल उठती है उसी प्रकार गायत्री मंत्र द्वारा आत्मा अपनी दैवी विशेषताओं से दृष्टिगोचर होने लगती है।

योग साधना में गायत्री मंत्र सबसे सुगम, सबसे श्रेष्ठ, सबसे शीघ्र सफल होने वाला है। इस महामंत्र के जाप मात्र से शरीर और मन के गुप्त प्रदेशों में सन्निहित अनेक शक्तिशाली एक रहस्यमय चक्र-उपचक्र अपने आप जाग्रत तथा विकसित होते हैं।

कुण्डलिनीयोग, षट्चक्र बेधन, नाड़ी शोधन आदि हठ योग का कष्ट साध्य क्रियाएँ करने से जो लाभ होते हैं वे मात्र गायत्री मंत्र के जाप से अनायास ही प्राप्त हो जाते हैं। इस मंत्र के उच्चारण से कुछ ऐसी नाड़ियों तथा पेशियों पर प्रभाव पड़ता है जो गुप्त योगिक ग्रन्थियों को धीरे-धीरे स्वयमेव जाग्रत करती रहती हैं और गायत्री मंत्र का साधक अनायास ही सिद्धि के मार्ग पर बढ़ता चलता है।

आत्म कल्याण के लिये गायत्री मंत्र से बढ़कर कोई दूसरा साधन नहीं है। योगी और तपस्वी दीर्घकाल तक साधनाएँ करके जो लाभ प्राप्त करते हैं वह गायत्री मंत्र द्वारा अल्पकाल और कम श्रम में ही मिल जाता है।

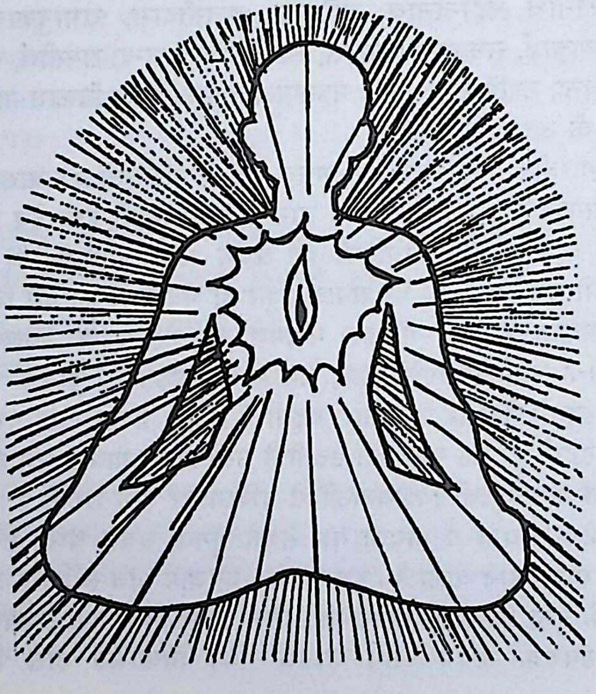

गायत्री मंत्र द्वारा कष्टों से मुक्ति

आत्मा परमात्मा का एक अंश है। परमात्मा आनन्दस्वरूप है और हम दुःखों और कष्टों से जूझ रहे हैं। यह एक विचारणीय प्रश्न है। गायत्री मंत्र का पहला कार्य कुबुद्धि से बचाना है। जो भी कुबुद्धि से बचने की ओर चलने का प्रण करता है वही गायत्री मंत्र का सच्चा उपासक है। यह मंत्र कष्टों से मुक्ति देने वाला है। बाहरी उपचार से बाहर के जीवन की प्रगति होती है परन्तु आन्तरिक अंतरंग विकास के बिना उसमें पूर्णता नहीं आ सकती। भौतिक समृद्धि और आत्मिक शान्ति के लिये गायत्री मंत्र की उपासना वैज्ञानिक प्रक्रिया एक अचूक साधना है और इसे स्वीकारना होगा कि उपासनाओं में सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोपरि एकमात्र गायत्री मंत्र की उपासना है।

प्राचीन ऋषि-मुनियों और शास्त्रकारों ने गायत्री मंत्र की सर्वोपरि शक्ति को एक स्वर में स्वीकार किया है। इसके अनेकों उदाहरण मिलते हैं जिनमें से कुछ निम्न हैं–

सर्वेषां जपसूक्तानां ऋचाँश्च यजुषां तथा।
साम्नां चैकाक्षरादीनां गायत्री परमो जपः।।

–वृहत् पाराशर स्मृति

समस्त जप सूत्रों में, समस्त वेद मंत्रों में, एकाक्षर बीज मंत्रों में

गायत्री मंत्र ही सर्वश्रेष्ठ है।

इति वेद पवित्राण्य भिहितानि एभ्य सावित्री विशिष्यते।

—शंख स्मृति

यों तो सारे वेद मंत्र पवित्र हैं पर इन सब में गायत्री मंत्र सर्वश्रेष्ठ है।

सप्त कोटि महामन्त्रा, गायत्री नायिका स्मृता।
आदि देवा ह्युपासन्ते गायत्री वेद मातरम्।।

—कूर्म पुराण

गायत्री मंत्र सर्वोपरि सेना नायक के समान है। देवता इसकी उपासना करते हैं। यही मंत्र चारों वेदों की माता है।

तदित्यृचा समो नास्ति मन्त्रो वेदचतुष्टये।
सर्वेवेदाँश्च यज्ञाश्च दानानि च तपांसि च।।
समानि कलया प्राहुर्मुनयो न तदित्यृक्।।

—याज्ञवल्क्य

गायत्री मंत्र के समान चारों वेदों में कोई मंत्र नहीं है। समस्त वेद, यज्ञ, दान, तप मिलकर भी एक कला के बराबर भी नहीं हो सकते। ऐसा विचार ऋषियों का है।

दुर्लभा सर्वमन्त्रेषु गायत्री प्रणवान्विता।
न गायत्र्यधिक किचित् त्रयीषुपरिगीयते।।

—हारीत

इस संसार में गायत्री मंत्र के समान परम समर्थ और दुर्लभ मंत्र कोई नहीं है। वेदों में गायत्री मंत्र से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है।

नास्ति गंगा समं तीर्थ न देवः केशवात्परः।
गात्र्यास्तु परं जाप्यं न भूतं न भविष्याति।।

—अत्रि

गंगा के समान कोई भी तीर्थ नहीं है। केशव के समान कोई देवता नहीं है। गायत्री मंत्र से श्रेष्ठ कोई जप न कभी हुआ है और न कभी होगा।

गायत्री सर्वमन्त्राणां शिरोमणिस्तथा स्थिता।
विद्यानामपि तेनैतां साधने सर्वसिद्धये।।
त्रिव्याहृतियुतां देवीमोंकारयुगसम्पुटाम्।
उपास्यचतुरो वर्गान्सादयेद्यो न सोऽन्धधीः।।
देव्या द्विजत्वमासाद्य श्रेयसेऽन्यरतास्तु ये।
ते रत्नानिवांछन्ति हित्वा चिंतामणि करात्।।

—महावार्तिक

गायत्री मंत्र सब मंत्रों और सब विद्याओं में शिरोमाणि है। इससे इन्द्रियों की साधना होती है। जो व्यक्ति इस उपासना के द्वारा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों को प्राप्त करने से चूकते हैं वे मन्द बुद्धि हैं। जो द्विज गायत्री मंत्र के होते हुए भी अन्य मंत्रों की साधना करते हैं वे ऐसे ही हतभागी हैं जैसे कि चिन्तामणि को फेंककर छोटे-छोटे चमकीले पत्थर ढूँढने वाले।

यथा कथं च जप्तैषा त्रिपदा परम पावनी।
सर्वकामप्रदा प्रोक्ता विधिना किं पुनर्नृय।।

जिस प्रकार उपासना करने वाले की गायत्री मंत्र द्वारा कामना पूरी होती है तो विधिवत् साधना करने के सत्परिणामों का तो कहना ही क्या है।

कामान्दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मी,
पुण्यं सूते दुष्कृतं य हिनस्ति।।
शुद्धां शान्तां मातरं मंगलानां,
धेनुं धीरां गायत्रीमन्त्रमाहुः।।

—वशिष्ठ

गायत्री मंत्र काम्धेनु के समान मनोकामना पूरी करता है, दुर्भाग्य, दरिद्रता आदि कष्टों को दूर करता है। पुण्य को बढ़ाता है। पाप का नाश करता है। ऐसी परम शुद्ध शान्तिदायक कल्याणकारी महाशक्ति को ऋषि लोग गायत्री मंत्र की संज्ञा देते हैं।

गायत्री मंत्र की उपासना नित्य-नियमित रूप से की जानी चाहिये। संध्या में प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल गायत्री मंत्र की उपासना करने को शास्त्रों में आवश्यक बतलाया गया है।

इस संसार में अगणित भौतिक और आध्यात्मिक कष्ट-संकट एवं विघ्न हैं। जिनके कारण सत्यात्य स्तर पर विघ्नरहित जीवन-यापन कठिन हो जाता है। प्रयत्न करते हुए भी सफलता हाथ नहीं लगती। ऐसी स्थिति में हमें हताश होकर गायत्री मंत्र का सहारा लेना पड़ता है।

गायत्री मंत्र का प्रधान कार्य कुबुद्धि का निवारण है जो व्यक्ति कुबुद्धि से बचने और जीवन में अग्रसर होने का व्रत लेता है वही गायत्री का सच्चा उपासक है। इस गायत्री मंत्र की उपासना का फल तत्काल मिलता है जो अपने अन्तःकरण में सद्बुद्धि को जितना स्थान देता है उसे उतनी ही मात्रा में तत्काल आनन्दमयी स्थिति का लाभ प्राप्त होता है।

गायत्री मंत्र सद्बुद्धि का मंत्र है। इस महामंत्र में कुछ ऐसी विलक्षण शक्ति है कि इसकी उपासना करने वाले के मस्तिष्क और हृदय पर बहुत जल्दी आश्चर्यजनक प्रभाव परिलक्षित होता है। मनुष्य के मनः क्षेत्र में समाये हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, चिन्ता, भय, शोक, ईर्ष्या, द्वेष, पाप, कुविचार आदि चाहे कितनी भी गहरी जड़ें जमाये बैठे हों मन में तुरन्त ही हलचल आरम्भ होती है और उनका उखड़ना, घटना तथा मिटना प्रत्यक्ष दिखाई पड़ने लगता है।

संसार के समस्त दुःखों की जननी कुबुद्धि ही तो है। जितने भी दुःखी मनुष्य इस विश्व में दिखाई देते हैं। उनके दुःखों का एक-

मात्र कारण कुविचार है। परमात्मा का पैदा किया हुआ मनुष्य दुःख के निमित्त नहीं अपने पिता के पुण्य उपवन-संसार में आनन्द क्रीड़ा करने को आता है। कष्टों का कारण तो केवल कुबुद्धि है। यही हमें आनन्द से वंचित करके नाना प्रकार के क्लेशों और शोक सन्तापों में फँसा देती है। जब तक यह कुबुद्धि मन में रहती है, तब तक कितनी ही सुख सामग्री प्राप्त होने पर भी चैन नहीं मिलता। कोई न कोई कलेश सामने खड़ा रहता है। इस विषम स्थिति से छुटकारा पाने के लिये कुबुद्धि को हटाकर सद्बुद्धि की स्थापना आवश्यक होती है। इसके बिना शान्ति मिलना किसी भी प्रकार सम्भव नहीं।

गायत्री मंत्र मनुष्य के सारे सन्तापों से छुटकारा देकर सच्ची शान्ति का अधिकारी बनाता है।

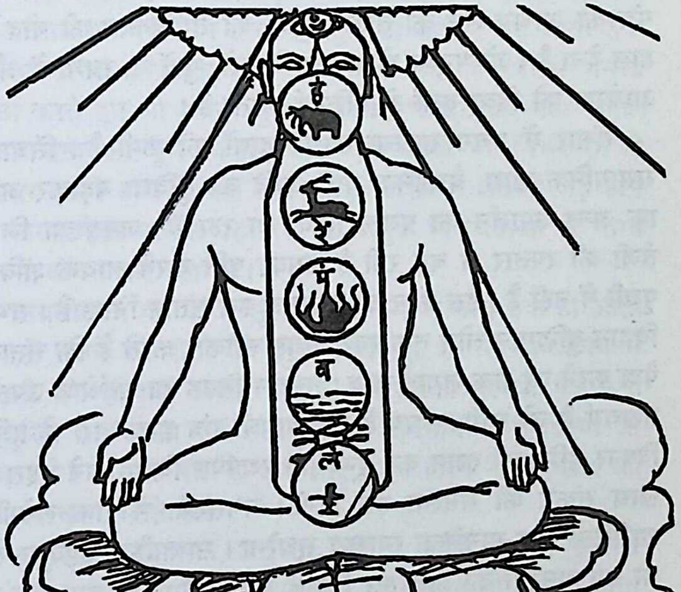

मानवीय समस्याओं का हल

गायत्री मंत्र सात्विकता का प्रतीक है। इस मंत्र की उपासना करने से आध्यात्मिक विचारों का अवलम्बन होता है जो अन्तः-करण में सतोगुणी परमार्थ भावना का बीजारोपण करते हैं। गायत्री मंत्र का आश्रय लेने का तात्पर्य बुद्धि को सात्विकता की गोद में डाल देना है। जो मनुष्य के समस्त विचारों, गुटों में, स्वभावों और आचरण को दिव्य तंत्रों से परिपूर्ण करती है।

संसार में प्रथम समस्या खाद्य पदार्थों की कमी है। सिंचाई, रासायनिक खाद्य, वैज्ञानिक यंत्रों आदि की सुविधा बढ़ाकर अधिक अन्न उपार्जन का प्रयत्न किया जा रहा है। जनसंख्या जिस तेजी की रफ्तार से बढ़ रही है उसकी पूर्ति करने लायक शक्ति पृथ्वी में नहीं है। इस प्रश्न का एकमात्र हल संतान निग्रह है। सभी विद्वान-बुद्धिमान लोग एक स्वर में यह स्वीकार करते हैं कि संतान पैदा करने पर रोक लगाई जाय। सन्तान निग्रह का सर्वश्रेष्ठ उपाय ब्रह्मचर्य है जो तभी सम्भव है जब गायत्री मंत्र द्वारा नारी के प्रति विकार दृष्टि को त्याग कर पूज्यभाव स्थापित किया जाये। इससे खाद्य संकट की समस्या हल होगी। जनसंख्या में रोक लगेगी, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य सुधरेगा। साप्ताहिक उपवास से भी इस समस्या का कुछ हल निकल सकता है।

सरकारी कर्मचारी, व्यापारी, धर्मप्रचारक, नेता, मजदूर आदि में

ठगी, विश्वासघात, वचन भंग, खुदगर्जी, अहंकार, परपीड़न, कर्त्तव्य, त्याग की बुराईयों की दूषित मनोवृत्ति काफी हद तक बढ़ रही है। इसी स्थिति पर भी गायत्री मंत्र द्वारा धर्म भावना, कर्त्तव्य निष्ठा, ईमानदारी, त्याग, प्रेम और सेवा की भावना पैदा की जा सकती है।

गायत्री मंत्र की साधना से शरीर के कुछ गुप्त कोपों, चक्रों, ग्रन्थियों का विकास होता है जिसके कारण दिव्य शक्तियां का बढ़ना अपने आप शुरू हो जाता है।

गायत्री मंत्र द्वारा बुद्धि की तीव्रता, शरीर की स्वस्थता, सत्पुरुपों की मित्रता, व्यावसायिक सफलता, कीर्ति प्रतिष्ठा, पारिवारिक सुखशान्ति, सुसंतति, शत्रु का निवारण जैसे अनेकों लाभ मिलते हैं। यही कारण है कि आत्मबल बढ़ने से गुण, कर्म और स्वभाव में आशाजनक परिवर्तन होने से बहुत सी बाधाएँ हट जाती हैं।

आन्तरिक निर्बलता एक व्यक्तिगत कमी है जिससे मनुष्य इच्छा करते हुए भी अपनी त्रुटियों के कारण कुछ कर नहीं पाता। मानव तत्व का पूर्ण विकास कुछ ऐसे तथ्यों पर निर्भर है जो अक्सर अपने हाथ में नहीं होते। सूक्ष्म शरीर में उसकी जड़ें होने के कारण ऐसा मानना पड़ता है कि अमुक विशेषताओं से भाग्य ने हमें वंचित कर रखा है।

गायत्री मंत्र का प्रवेश सूक्ष्म शरीर के उस भाग तक ही आता है जहाँ भाग्य को फेरने की कुंजी छिपी हुई है। मानव जीवन में जितनी भी गुत्थियाँ उलझी पड़ी हैं उन सबको गायत्री मंत्र रूपी सद्‌बुद्धि, सात्विकता एवं सत्यवृति को अपनाने से सुलझाया जा सकता है। गायत्री मंत्र के जप और मनन करने से सद्‌बुद्धि की राह पर चल सकते हैं।

कुबुद्धि को ही माया, असुरता, अविद्या आदि नामों से पुकारते हैं। यह आवरण मनुष्य की मनोभूमि पर जितना मोटा चढ़ा होता है, वह उतना ही दुःख पाता जाता है। कुबुद्धि एक प्रकार से शरीर

पर जमी हुई मैल की तह या रक्त से भरी हुई विषैली विकृति है जिसके कारण खुजली, दुर्गन्ध, बीमारी तथा अनेक प्रकार की पीड़ा, चिन्ता, बेचैनी और परेशानी उत्पन्न होती रहती हैं।

दुख चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक, उसका कारण एक ही है और वह है—'कुबुद्धि।' संसार में इतने प्रचुर परिमाणों में सुख-साधन भरे पड़े हैं कि इन खिलौनों से हमारा सारा जीवन हँसी-खुशी में वीत सकता है। मनुष्य को ऐसा अमूल्य शरीर, मस्तिष्क एवं इन्द्रिय समूह मिला हुआ है कि इनके द्वारा साधारण वस्तुओं एवं परिस्थितियों में भी इतना आनन्द लिया जा सकता है कि स्वर्ग भी उसकी तुलना में तुच्छ सिद्ध होगा।

यह संसार चित्र सा सुन्दर है। इसमें कुरूपता का एक कण भी नहीं। यह विश्व विनोदमयी क्रीड़ा का प्रांगण है। इसमें चिन्ता और भय के लिये कोई स्थान नहीं है। यह जीवन आनन्द का निर्झर है। इसमें दुःखी रहने का कोई कारण नहीं। इस जननी जन्मभूमि में वे सभी तत्त्व मौजूद हैं जो मानस की कली को खिलाते हैं। स्वस्थता हमारी स्वाभाविक स्थिति है, बीमारी अस्वाभाविकता एवं अपनी भूल से पैदा हुई है। यदि हम अपना आहार-विहार प्रकृति के अनुरूप रखें तो कभी भी बीमार न पड़ें। इसी प्रकार सद्बुद्धि स्वाभाविक है।

भगवान् ने हमें संसार में भेजते समय सद्बुद्धि रूपी कामधेनु भी दी है ताकि हमारे सम्पूर्ण सुख साधन जुटाती रहे, परन्तु हम भूलवश, भ्रमवश, अज्ञानवश, मायाग्रस्त होकर सद्बुद्धि को त्यागकर कुबुद्धि को अपना लेते हैं और जैसे मिथ्या चरण से बीमारी न्यौत बुलाई जाती है वैसे ही मानसिक अव्यवस्थता के कारण कुबुद्धि को आमंत्रित किया जाता है। यह पिशाचनी जहाँ आई नहीं कि जीवन का सारा क्रम उलट-पलट हो जाता है। यह दोनों एक साथ नहीं रह सकती। जहाँ कुबुद्धि होगी वहाँ तो अशान्ति, चिन्ता, तृष्णा, कायरता आदि की कष्टकारक स्थितियों का निवास होगा।

गायत्री मंत्र सद्‌बुद्धि देने वाला है। इस महामंत्र में सद्‌बुद्धि के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई है। गायत्री मंत्र की रचना ऐसे वैज्ञानिक आधार पर हुई है कि उसकी साधना से अपने भीतर छिपे हुए अनेकों गुप्त शक्ति केन्द्र खुल जाते हैं और अन्तःस्थल में सात्विकता की धारा बहने लगती है। गायत्री मंत्र दैविक प्रकाश की तरह वह अखण्ड ज्योति है जिसके जाप से कुबुद्धि का अन्धकार दूर हो जाता है।

आपत्तियों के समय लोग भौतिक उपायों से निवारण का उपाय तो करते हैं पर उन उपायों की सामर्थ्य अतिस्वल्प एवं अस्थायी है। इसलिये निश्चयपूर्वक यह नहीं कहा जा सकता कि इन उपायों से वे संकट तो टल ही जायेंगे। अस्वस्थता के लिये औषधियों का, शत्रु प्रतिरोध के लिये अस्त्र शस्त्रों का, दरिद्र निवारण के लिये व्यवसाय का, उलझनों को सुलझाने के लिये विद्या बुद्धि का और प्रयत्न पुरुषार्थ का हर कोई आश्रय लेता है। किन्तु इन उपायों का परिणाम अमोघ नहीं। भौतिक पदार्थ उपाय तभी स्वल्प सामर्थ्यवान एवं अनिश्चित है। इसलिये उनके परिणाम के बारे में भी कोई निश्चय नहीं कि अभीष्ट प्रतिफल मिल ही जायेगा एवं प्रस्तुत संकट टल ही जायेगा।

आत्मबल की शक्ति अमोघ है। उसकी क्षमता भौतिक माध्यमों की तुलना में असंख्य गुनी बढ़ी-चढ़ी है। इसलिये जब कोई ऐसा संकल्प सामने आ खड़ा हो, जिसका निवारण सामान्य उपायों से सम्भव न दीखता हो, तब आत्म शक्ति का सहारा लिया जाता है। आत्म-बल उत्पन्न करने और बढ़ाने के उपायों में गायत्री मंत्र की उपासना सर्वोपरि है। आपत्तियों के निवारण में लोक व्यवहार में प्रचलित उपाय करते हुए, यदि आत्म-शक्ति को उत्पन्न एवं प्रयुक्त किया जा सके तो उसके आश्चर्यजनक परिणाम देखे जा सकते हैं।

आत्मोद्धार की भावना

आत्मोद्धार के जितने भी साधन हैं उनमें गायत्री मंत्र किसी भी तरह कम नहीं है। इतिहास पुराणों के अनुसार सदन कसाई, हत्यारा अजामिल, डाकू वाल्मीकि को भी सद्गति मिली। आम्रपाली वेश्या साधवी-तपस्वी बन गई। वेश्यागामी पुरुष सूरदास के परम भक्त बन गये। पापों के प्रायश्चित के जितने भी उपाय हैं उनमें गायत्री मंत्र की उपासना सबसे सरल और सर्वश्रेष्ठ है।

ब्रह्म हत्यादि पापानि गुरुपि च लघुनि च।
नाशयन्त्यचिरेणैव गायत्री जपते द्विजः।।

गायत्री मंत्र का जप करने वाले के सभी पाप चाहे बड़े हों या छोटे, शीघ्र ही स्वयं नष्ट हो जाते हैं।

गायत्री जप कृद्-भक्त्या सर्व पापै प्रमुच्यते।

—पाराशर

गायत्री मंत्र का भक्तिपूर्वक जप करने वाला समस्त पापों से छूट जाता है।

सर्व पापानि नश्यन्ति गायत्री जपतो नरः।

—व्यास

गायत्री मंत्र को जपने वाले मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

गायत्री जपतो यस्तु कल्पमुत्थापयो द्विजः।
स लिम्पति न पापेभ्यो पद्म पत्र मिवाभ्म्सा।

—अत्रि

जो व्यक्ति प्रातः काल गायत्री मंत्र का जप करता है वह जल में कमल-पत्र की भांति पाप-ग्रस्त नहीं होता। पारस मणी को किसी ने देखा नहीं है परन्तु गायत्री मंत्र प्रत्यक्ष पारस मणी है। यह कालिमायुक्त हृदय को भी स्वर्ण जैसा शुद्ध, परम पवित्र और निष्पाप बना सकता है। मस्तिष्क को बल देने और बुद्धि को तीव्र करने की असाधारण शक्ति गायत्री मंत्र में भरी पड़ी है।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती गंगा में खड़े होकर गायत्री जप किया करते थे। जन्मान्ध होते हुए भी उन्होंने संस्कृत एवं वेद का असाधारण ज्ञान प्राप्त किया। यह केवल उन्हें गायत्री मंत्र के जप द्वारा ही हुआ।

गायत्री मंत्र के चार चरणों से किस प्रकार की कुबुद्धियाँ दूर होती हैं—

1. "ॐ भूर्भवः स्वः"

इस प्रथम पाद को हृदयंगम कर लेने से मनुष्य के घट-घट में कण-कण में समाये हुए परमात्मा की झांकी मिलती है।

2. "तत्सवितुर्वरेण्य"

गायत्री मंत्र का दूसरा चरण साधन करने वाले को विवेक, दूरदर्शिता, तत्वदृष्टि, दिव्यज्ञान एवं सूक्ष्मावलोकन की क्षमता उत्पन्न करता है।

३. "भर्गोदेवस्य धीमहि"

गायत्री मंत्र का तीसरा चरण मनुष्य को देवी संपत्तियाँ प्रदान करता है।

4. "धियोयोनः प्रचोदयात्"

गायत्री मंत्र का चौथा चरण आत्म निरीक्षण, आत्म शुद्धि, आत्म उन्नति एवं आत्म साक्षात्कार करने की शक्ति उत्पन्न करता है।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती गंगा में खड़े होकर गायत्री का जप करते थे। जन्म से अन्धे होते हुए भी उन्होंने संस्कृत एवं वेद का असाधारण ज्ञान प्राप्त किया। इसका कारण उनका गायत्री तप ही था।

कहा जाता है कि लोहे को सोना बना देने का गुण पारस मणी में होता है। पारस किसी ने देखा नहीं है—पर गायत्री मंत्र रूपी पारस मणी प्रत्यक्ष है। यह काले कलुषित हृदयों को भी स्वर्ण-सा शुद्ध, परम पवित्र और निष्पाप बना सकता है। मस्तिष्क को बल देने एवं बुद्धि को तीव्र करने की असाधारण सामर्थ्य गायत्री मंत्र में भरी हुई है। कई व्यक्ति जो आरम्भ में बड़ी मन्द बुद्धि और मतिहीन थे, उनकी बुद्धि में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए हैं। जिनकी बुद्धि आरम्भ से ही तीव्र है उनका मस्तिष्क तो इस महामंत्र के प्रकाश से कमल पुष्प की तरह खिल पड़ता है।

जिनकी स्मरण शक्ति शिथिल है, बुद्धि मन्द है, मस्तिष्क जल्दी थक जाता है, उन्हें गायत्री उपासना करके थोड़े ही समय में इस महाशक्ति के चमत्कार देखने को मिलते हैं। कीमती दवाएँ जो कार्य नहीं कर सकतीं वह इससे पूरा होता है। ब्राह्मी तेल लगाने और बादाम पाक सेवन से मस्तिष्क को उतना बल नहीं मिल सकता जितना इस उपासना से मिलता है। जिनके घर में कुबुद्धि का

साम्राज्य छाया रहता है, आपस में द्वेष, असहयोग, मनमुटाव, कलह, दुराव एवं दुर्भाव रहता है। आये दिन झगड़े रहते हैं। आपाधापी और स्वार्थपरता में प्रवृत्ति रहती है। गृह-व्यवस्था को ठीक रखने, समय का सदुपयोग करने, योग्यताएँ बढ़ाने, अनुशासन मानने, कुसंग से बचने, श्रमपूर्वक आजीविका कमाने, मन लगाकर विद्याध्ययन करने में प्रवृत्ति न होना आदि दुर्गुण कुबुद्धि के प्रतीक हैं। जहाँ यह बुराइयाँ भरी रहती हैं, वे परिवार कभी भी उन्नति नहीं कर सकते, अपनी प्रतिष्ठा को कायम नहीं रख सकते, इसके विपरीत उनका पतन आरम्भ हो जाता है। बिखरी हुई झाड़ू की सींकों की तरह छिन्न-भिन्न होने पर वर्तमान स्थिति भी स्थिर नहीं रहती। दरिद्रता, हानि, घाटा, शत्रुओं का प्रकोप, मानसिक अशान्ति की अभिवृद्धि आदि बातें दिन-दिन बढ़ती हैं और वे घर कुछ ही समय में अपना सब कुछ खो बैठते हैं। कुबुद्धि ऐसी अग्नि है कि वह जहाँ भी रहती है वहीं की वस्तुओं को जलाने और नष्ट करने का कार्य निरन्तर करती रहती है। ऐसे में गायत्री मंत्र की उपासना करना एक अमोघ अस्त्र है।

गायत्री मंत्र की ब्रह्म-शक्ति के अनेक लाभ हैं। उनमें आध्यात्मिक लाभ मुख्य एवं सांसारिक लाभ गौण हैं। किन्तु सद्बुद्धि का प्राप्त होना तो सुनिश्चित है। क्योंकि गायत्री प्रधान तथा सद्बुद्धि का मंत्र है। इसे जो लोग श्रद्धापूर्वक अपनाते हैं उनकी अनेकों बुरी आदतें अपने आप दूर होने लगती हैं।

गायत्री तपस्या की दिव्य सुगन्ध साधक की आत्मा में से सदैव उड़ती रहती है। वह जहाँ भी जाता है, जहाँ भी बैठता है वहीं वह सद्बुद्धि की शक्ति तरंगें छोड़ता है और वहाँ की अशान्ति मिटकर तुरन्त शान्ति स्थापित होती है।

(1) अपनी मनोभूमि में छाये हुए अज्ञान का निवारण होकर परम श्रेयस्कर आत्मिक उन्नति का होना, (2) अनेक दोषों, पापों और बुरी आदतों से छुटकारा मिलना, (3) मानसिक उलझनों का

नष्ट होना, (4) पिछले पापों का प्रायश्चित्त होकर कर्मबन्धन मिटना, (5) बुद्धि की तीव्रता मनोबल का विकास, (6) सद्भावना और सुमति का बढ़ना गायत्री मंत्र के बौद्धिक लाभ हैं।

गायत्री मंत्र मनुष्य की सभी बुराइयों को दिन-दिन घटाती है और उसकी धीरे-धीरे शुद्ध बुद्धि, पवित्र आत्मा बनती चलती है। कुकर्मी, चोर, व्यभिचारी, अभक्ष, भोगी, व्यसनी और पापी व्यक्ति भी जब गायत्री उपासना आरम्भ करते हैं तो उनकी अन्तरात्मा स्वयं इतनी बलवती होने लगती है कि शरीर और मन में बुराइयों का ठहरना ही सम्भव नहीं रहता।

गायत्री मंत्र की उपासना से परिणाम शुभ ही होगा। शास्त्रों की विधि-विधानपूर्वक की हुई गायत्री उपासना कभी भी निष्फल नहीं जाती। उससे मानसिक शान्ति का निश्चित रूप से अच्छा परिणाम प्राप्त होता है।

संसार में जितनी भी सुख-सम्पत्तियाँ हैं, उस सर्वशक्तिमान सत्ता के हाथ में है। वही उसकी स्वामिनी है। जब उस परब्रह्म से मनुष्य अपना सम्बन्ध स्थापित कर लेता है और उसकी कृपा का अधि ाकारी बन जाता है तो उसे अपने इष्टदेव के अधिकार की कोई भी वस्तु प्राप्त करना कठिन नहीं रहता। इसी प्रकार उस परब्रह्म की कृपा को जो लोग प्राप्त कर लेते हैं उनके लिये इस विश्व का प्रत्येक पदार्थ, प्रत्येक सुख, गौण हो जाता है। उनके लिए कोई अभाव एवं त्रास शेष नहीं रहता।

गायत्री महामंत्र ईश्वरीय, कृपापात्र बनने का सर्वोत्तम साधन है। इस मंत्र में बताई हुई शिक्षाओं को अपने जीवन में डाल देने वाले गायत्री के 24 अक्षरों में बताते हुए सिद्धान्तों, आदर्शों, दृष्टिकोणों एवं कर्तव्यों को हृदयंगम करने वाला मनुष्य प्रभु को अत्यन्त प्रिय होता है। जो भक्ति का परिचय दे वही भक्त है। भक्ति का एकमात्र लक्षण ईश्वर की आज्ञाओं को पालन करना, उसके बताये हुए मार्ग पर चलना है। जो लोग हर घड़ी ईश्वर की

आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं। जिनके विचार ईश्वरीय विचार-धारा से विपरीत दिशा में चलते रहते हैं, जो अपने धर्म, कर्तव्यों की उपेक्षा करते रहते हैं, ऐसे लोग केवल पूजा-पाठ से ईश्वर के भक्त नहीं बन सकते और न प्रभु का अनुग्रह प्राप्त कर सकते हैं।

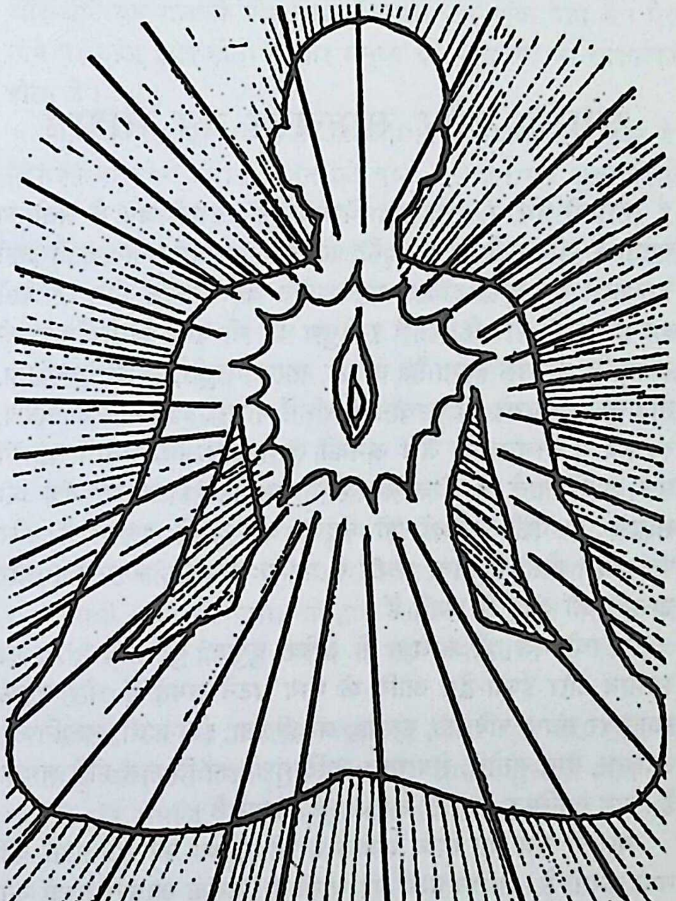

समृद्धि और सफलता का साधन

गायत्री मंत्र में सभी गुण विद्यमान हैं। इसके जप से सतोगुण बढ़ता है और रजोगुण की वृद्धि होती है। इसकी उपासना से जहाँ सत्-तत्त्व की वृद्धि होकर आत्मशक्ति का विकास होता है वहाँ कल्याणकारी और हितकारी रजोगुण की भी वृद्धि होती है। इससे रजोगुणी आत्मबल बढ़ता है। उत्साह, साहस, स्फूर्ति, आशा, दूरदर्शिता, तीव्र बुद्धि, अवसर की पहचान, वाणी में माधुर्य, व्यक्ति में आकर्षण, स्वभाव में मिलनकारी जैसे अनेकों लाभदायक विशेषतायें गायत्री मंत्र जपने वाले में विकसित होने लगती हैं। गायत्री मंत्र की साधना से ऐसी त्रुटियाँ जो मनुष्य को दुःखी बनाती हैं और पतनकारी होती हैं, नष्ट होकर वे क्रमशः समृद्धि, सम्पन्नता और उन्नति की ओर ले जाती हैं।

गायत्री मंत्र की साधना से अनेक दुर्गुण, बुरे विचार, खराब स्वभाव और ईर्ष्या-द्वेष आदि के भाव घटने लगते हैं और उनके स्थान पर संयम, पवित्रता, उत्साह, श्रमशीलता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, उदारता, प्रेम, संतोष, सेवाभाव आदि गुणों का विकास होने लगता है। यह आत्मिक उन्नति का अपूर्व साधन है।

गायत्री मंत्र वह दिव्य शक्ति है जो मनुष्य की क्षुद्रताओं को नष्ट करती है। मलिनताओं को धोती है। उसके आसुरी तत्त्वों को समाप्त कर दैवी तत्त्वों का विकास करती है। गायत्री मंत्र मनुष्य

के स्थूल तत्त्व को कम करके सूक्ष्मत्व को विकसित करता जाता है। इस मंत्र की साधना से अन्तःकरण में एक दिव्य-ज्योति उत्पन्न होती है जो हृदयगत अंधकार को नष्ट करती है। मन रूपी कमरे में जो दुर्गुण, दोष, आसक्ति, राग-द्वेष जैसा कूड़ा पड़ा हुआ है उसे धीरे-धीरे यह गायत्री मंत्र बाहर निकाल कर फेंक देता है। ऐसा होने पर बुद्धि शुद्ध होती है और मनुष्य को परमात्मा का साक्षात्कार होता है।

गायत्री मंत्र की उपासना आध्यात्मिक व्यायाम के बराबर है। जिसका परिणाम शरीर जीवन को पुष्ट, बलवान एवं सुव्यवस्थित बनाना है। यह मंत्र मनुष्य में सद्बुद्धि का संचार करता है। सद्बुद्धि एक महान शक्ति है जो जीवन क्रम को बदलती है। उसी परिवर्तन के साथ मनुष्य की परिस्थितियाँ भी बदलती रहती हैं। जो व्यक्ति गायत्री मंत्र की साधना करता है वह सद्बुद्धि तथा सुख-शान्ति का वरदान प्राप्त करता है। इसीलिये दृढ़पूर्वक कह सकते हैं कि कुबुद्धि से सद्बुद्धि की ओर अग्रसर करने वाला केवल यह गायत्री मंत्र ही है।

गायत्री साधना का उपासक भीतर ही भीतर एक नये साँचे में ढलता है और उसमें ऐसे परिवर्तन हो जाते हैं कि वह साधारण स्थित से उन्नति करके धनी और वैभवशाली बन सकता है।

गायत्री मंत्र की उपासना द्वारा साधक में ऐसी शक्ति का प्रादुर्भाव होता है जिसके प्रभाव से वह अभावग्रस्त या दीन-हीन नहीं रह सकता।

गायत्री मंत्र का उपासक भीतर ही भीतर एक नये साँचे में ढलता है और उसमें शीघ्र ही परिवर्तन आने शुरू हो जाते हैं। गायत्री मंत्र समृद्धि और सफलता का एकमात्र साधन है।

दिव्य शक्ति का नाम गायत्री मंत्र

एक चमत्कारी दिव्य शक्ति का नाम है गायत्री मंत्र। यह मनुष्य की क्षुद्रताओं को नष्ट करता है, मलिनता को धोता है, उसके आसुरी तत्त्वों को समाप्त करके दैवी तत्त्वों का विकास करता है। लोभ से वशीभूत होकर मनुष्य घृणित से घृणित कार्य करने पर उतारू हो जाता है परन्तु एक बार यह आवाज अवश्य आती है। गायत्री मंत्र का साधक उसे स्पष्ट और शक्तिशाली रूप में अनुभव करता है। साधन और तप के अभाव से वह उस आवाज के अनुसार भले ही आचरण न कर सके परन्तु यह निश्चित है कि वह अपनी कमी को अनुभव करता है। यही सफलता की पहली सीढ़ी है।

गायत्री मंत्र की साधना से अन्तःकरण में दिव्य-ज्योति की उत्पत्ति होती है जो हृदयगत अंधकार को नष्ट करती है। गायत्री मंत्र की साधना भगवान को बुलाने का एक प्रकार का निमंत्रण-पत्र है क्योंकि इससे बुद्धि शुद्ध व पवित्र होती है और ऐसे ही साधक को परमात्मा का साक्षात्कार होता है।

गायत्री मंत्र बड़ी चमत्कारी साधना है। इसके द्वारा मनुष्य को लौकिक और पारलौकिक लाभ तो अवश्य प्राप्त होते ही हैं, और अनेक मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। परन्तु अनेक बार इसके प्रभाव से मनुष्य की इस प्रक़ार रक्षा हो जाती है कि उसे दैवी

चमत्कार के सिवाय और कुछ नहीं कहा जा सकता। कारण यही है कि इस साधना के कारण साधक में कुछ ऐसी दैवीय तत्त्वों का विकास हो जाता है जो ऐसी आकस्मिक आवश्यकता अथवा संकट के समय अदृश्य रूप से उसके सहायक बनते हैं। जिन लोगों ने गायत्री मंत्र के आदेशानुसार आत्म शुद्धि और जगत् के मंगल की भावना को अपना लिया है। उसकी रक्षा बड़ी-बड़ी आपत्तियों से भी सहज हो जाती है।

एक बहुत पुरानी कहावत है कि—"शरीरम् व्याधिक मन्दिरम्।" जो इसका अर्थ यह लगाते हैं कि रोगी होना मनुष्य के लिये स्वाभाविक बात है। और शरीर में किसी भी व्याधि का प्रकोप हो जाना मनुष्य के वश से बाहर की बात है, वास्तव में बड़ी भूल करते हैं। प्रकृति ने मनुष्य का शरीर स्वास्थ्य सबल और कार्य क्षम रहने के लिये बनाया है। यदि मनुष्य अनुचित और विपरीत आहार-विहार की आदत डालकर उसे रोगी बना डालता है तो इसमें दोष न प्रकृति का है और न शरीर का। इन्द्रियों के वशीभूत होकर मनुष्य सीधे और सच्चे मार्ग को छोड़कर हानिकारक मार्गों को अपना लेता है और इसका दण्ड उसे शारीरिक तथा मानसिक निर्बलता तथा भाँति-भाँति की बीमारियों के रूप में भोगना पड़ता है। यदि मनुष्य शास्त्रों के अनुसार संयमपूर्ण जीवन व्यतीत कर और स्वास्थ्य संबंधी शारीरिक तथा मानसिक नियमों पालन करता रहे तो निःसन्देह वह निरोग रहकर सुखी जीवन व्यतीत कर सकता है।

मनुष्य के भीतर से तमोगुण को निकाल कर सतोगुण की वृद्धि की जप और सत्तत्त्व की वृद्धि का गायत्री मंत्र की साधना से बढ़कर कोई अन्य उपाय नहीं है। गायत्री मंत्र का सर्वप्रथम उद्देश्य ही यह है कि हम परमात्मा से अपनी बुद्धि के शुद्ध और निर्मल होने की अन्तःकरण से प्रार्थना करें। शुद्ध बुद्धि ही सब प्रकार से मनो विकारों की सच्ची औषधि है। यही हमारे भीतर से तमोगुण

को निकालकर सतोगुग की प्रतिष्ठा कर सकती है। आवश्यकता है सच्ची श्रद्धा और आन्तरिक विश्वास की। जो जितनी हृदय से गायत्री मंत्र की साधना कर सकेगा वह उतनी ही शीघ्रता से व्याधियों से मुक्ति पा सकेगा।

"कुबुद्धि" को ही माया, असुरता, अविद्या आदि नामों से पुकारते हैं। यह आवरण मनुष्य की मनोभूमि पर जितना मोटा चढ़ा होता है वह उतना ही दुःखी पाया जाता है। कुबुद्धि एक प्रकार से शरीर पर जमी हुई मैल की तह की तरह है। वह रक्त से भरी हुई विषैली विकृति है, जिसके कारण खुजली, दुर्गन्ध, बीमारी तथा अनेक प्रकार की पीड़ा चिंता, बेचैनी और परेशानी उत्पन्न होती है। लोग नाना प्रकार के कष्टों से दुःखी हैं।

गायत्री मंत्र का जप एक सद्बुद्धि है। इसके जप में एक विलक्षण शक्ति है तथा इसके जपने से सभी कष्टों से मुक्ति मिल सकती है।

लाखों और करोड़ों आत्माओं का तारक गायत्री मंत्र है। गायत्री मंत्र के अर्थ पर विचार करने पर यह बात स्वयमेव सिद्ध हो जाती है। पृथ्वी, अन्तरिक्ष और ध्रुवलोक, तीनों लोकों की रचना करने वाले ॐरूपी परमात्मा हैं। उनकी वरणीय ज्योति का हम ध्यान करते हैं। क्यों करते हैं ? उनसे हमारा क्या सम्बन्ध है? इसलिए कि वह "धियो योनः प्रचोदयात्" हमारी बुद्धि को प्रेरणा देने वाले हैं। इसका अर्थ यह है कि जो सृष्टि की रचना करने वाले हैं वही हमारी बुद्धि के प्रेरक हैं। इन दोनों शक्तियों में कोई अन्तर नहीं है।

गायत्री मंत्र के अर्थ पर कुछ और गम्भीरतापूर्वक विचार करें तो प्रतीत होता है कि इससे तीन बातों का ज्ञान होता है। 1. "सवितुर्वरेण्यं भर्ग" वह तेजस्वी वरण करने योग्य और पापनाशक शक्ति अर्थात् परमात्म तत्व। 2. "धियो योनः" जीव का वुद्धि तत्व, 3. "प्रचोदयात्" परमात्मा और बुद्धि वल को मिलाने वाला

प्रेरक सम्बन्ध। एक अखिल ब्रह्माण्ड का केन्द्र है, दूसरा जीवन का केन्द्र। तीसरा उनको मिलाने वाला प्रचोदयात्मक तत्त्व है।

गायत्री मंत्र वह दिव्य शक्ति है जो मनुष्य की क्षुद्रताओं को नष्ट करती है, मलिनताओं को धोती है, उसके आसुरी तत्वों को समाप्त कर दैवी तत्वों का विकास करती है। क्षुद्र प्राणी की अनुभूति है कि छोटे से छोटे अनुचित कार्य करते हुए उसके अपने अन्दर से एक आवाज आती है कि यह कार्य अविवेकपूर्ण है। इससे उसको या समाज को हानि होगी। यह उसे करना नहीं चाहिए। लोभ के वशीभूत होकर मनुष्य घृणित से घृणित कार्य करने पर उतारू हो जाता है परन्तु एक बार यह आवाज अवश्य आती है। गायत्री मंत्र का साधक उसे स्पष्ट और शक्तिशाली रूप में अनुभव करता है। उस आवाज के अनुसार भले ही आचरण न कर सके परन्तु यह निश्चित है कि वह अपनी कमी को अनुभव करता है। यह सफलता की पहली सीढ़ी है। प्रायः देखा जाता है कि लोग अपनी कमियों और कमजोरियों को अनुभव ही नहीं करते, उनके मानस क्षेत्र में अंधकार का पर्दा पड़ा रहता है। उनके दोष उन्हें दोष ही दिखाई नहीं देते, दोषों की निवृत्ति कैसे हो ? गायत्री का साधक ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता है, त्यों-त्यों उसे अपने दोष स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं। उसकी आत्मा उसे निरंतर नोचती रहती है। एक दिन वह भी जिस बात को साधारण व्यक्ति एक कठिन समस्या मानते हैं, गायत्री के साधक के लिए वह एक सहज बात होती है क्योंकि गायत्री मंत्र मनुष्य के स्थूल तत्त्व को कम करके सूक्ष्मतत्त्व को विकसित करता जाता है। सूक्ष्म तत्त्व का विकास होने पर शक्ति की वृद्धि होती है। शक्ति वृद्धि होने पर दोषों और दुर्गुणों के विरुद्ध संघर्ष करने और उन पर विजय पाने की शक्ति प्राप्त होती है। ज्यों-ज्यों यह सामर्थ्य बढ़ती जाती है त्यों-त्यों मनुष्य अणु से महान बनता जाता है। यही गायत्री मंत्र की साधना का उद्देश्य और यही उसकी अनुभूति है।

गायत्री मंत्र की साधना से अंतःकरण में एक दिव्य-ज्योति की उत्पत्ति होती है जो हृदयगत अंधकार को नष्ट करती है, जिस प्रकार से साबुन से कपड़े उजले हो जाते हैं, झाड़ू से कमरे को साफ किया जाता है, उसी प्रकार से गायत्री मंत्र रूपी दिव्य साबुन मन रूपी कपड़ों को साफ करता है। यह ऐसा चमत्कारी दिव्य झाड़ू है कि मन रूपी कमरे में जो दुर्गुण, दोष, आसक्ति, राग-द्वेष सभी कूड़ा पड़ा हुआ है, उसको धीरे-धीरे निकाल देता है। यह कूड़ा-करकट-निकलने के बाद ही मन भगवान के बैठने योग्य पवित्र आसन बनता है। गायत्री मंत्र की साधना भगवान को बुलाने का एक प्रकार का निमंत्रण-पत्र है क्योंकि इससे बुद्धि शुद्ध व पवित्र होती है और ऐसे साधक को परमात्मा का साक्षात्कार होता है।

गायत्री महामंत्र का प्रधान कार्य कुबुद्धि का निवारण है। जो व्यक्ति कुबुद्धि से बचने और अग्रसर होने का व्रत लेता है वही गायत्री का सच्चा उपासक है। इस उपासना का फल तत्काल मिलता है जो अपने अन्तःकरण में सद्‌बुद्धि को जितना स्थान देता है उसे उसी के अनुसार उतनी ही मात्रा में तत्काल आनन्दमयी स्थिति का लाभ प्राप्त होता है।

कुबुद्धि ने जिसके दृष्टिकोण को, विचार प्रवाह को दूषित बना दिया है, वह चाहे स्वर्ग में रखा जाय चाहे कुबेर-सा धनपति या इन्द्र-सा सत्ता-सम्पन्न बना दिया जाय तो भी दुःखों से छूट नहीं सकेगा।

गायत्री सद्‌बुद्धि का मंत्र है। इस गायत्री महामंत्र में कुछ ऐसी विलक्षण शक्ति है कि उपासना करने वाले के मस्तिष्क और हृदय पर बहुत जल्दी आश्चर्यजनक प्रभाव परिलक्षित होता है। मनुष्य के मनः क्षेत्र में समाये हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, चिन्ता, भय, शोक, ईर्ष्या, द्वेष, पाप, कुविचार आदि चाहे कितनी ही गहरी जड़ जमाये बैठे हों, मन में तुरन्त ही हलचल आरम्भ होती है और उनका उखड़ना, घटना तथा मिटना प्रत्यक्ष दिखाई

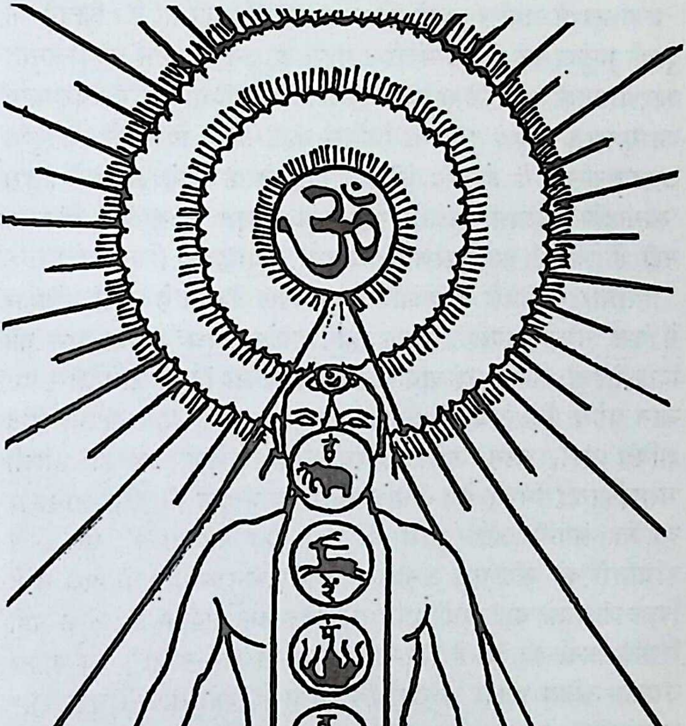
ॐ

पड़ने लगता है।

संसार में समस्त दुःखों की जननी कुबुद्धि ही ता है। जितने भी दुःखी मनुष्य इस विश्व में दीख पड़ते हैं, उनके दुःखों का एकमात्र कारण उनके आज के अथवा भूतकाल के कुविचार ही हैं। परमात्मा का युवराज मनुष्य दुःख के निमित्त नहीं, अपने पिता के इस पुण्य उपवन-संसार में आनन्द की क्रीड़ा करने के लिये आता है। इस 'स्वर्गादपि गरीयसी' धरती माता पर वस्तुतः दुःख का अस्तित्व नहीं है। कष्टों का कारण तो केवल 'कुबुद्धि' है।

संसार में सबसे वड़ी शक्ति आत्मबल की ही है। वैसे व्यवहार में इस समय सबसे अधिक आवश्यकता अर्थ अथवा धन की दिखलाई पड़ती है, पर यदि तनिक भी विचार किया जाये तो स्पष्ट जान पड़ेगा कि अर्थ तो सर्वथा जड़ समान है। उसमें अपनी कोई शक्ति नहीं, वरन् उसका उपयोग करने वाले पर ही उसकी भलाई-बुराई निर्भर है। जैसे तलवार या बन्दूक के द्वारा जानकार व्यक्ति अपनी और दूसरों की रक्षा कर सकता है, पर इन्हीं हथियारों को यदि एक अनजान या बुद्धिहीन व्यक्ति के हाथ में दे दिया जाय तो वह स्वयं अपने को चोट लगा सकता है। ठीक यही स्थिति अर्थ की भी है। समझदार व्यक्ति धन-सम्पत्ति को पाकर उसका उचित प्रकार से उपभोग करता है, जिससे उसे सुख और लाभ प्राप्त होता है, पर एक मूर्ख अथवा उन्मत्त के हाथ में सम्पत्ति पड़ जाने से वह प्रायः उसका दुरूपयोग ही करता है, जिससे उसका भी अनिष्ट होता है और दूसरों को भी वह हानि ही पहुँचाता है। इस उदाहरण से स्पष्ट है कि संसार में प्रधानता आत्मशक्ति और बुद्धि की ही है और बुद्धि भी वही श्रेष्ठ है जो आध्यात्मिकता से युक्त होती है। तामसिकता अथवा आसुरी भावों से युक्त बुद्धि कल्याण के स्थान में अकल्याणकारी होती है।

गायत्री मंत्र को सबसे बड़ा शक्ति देने वाला साधन बतलाते हैं। गायत्री का मुख्य उद्देश्य आत्मशक्ति और सद्बुद्धि की कामना

करना है, जिसके द्वारा मनुष्य अपना लौकिक और पारलौकिक, दोनों प्रकार का हित भली प्रकार सम्पन्न कर सके। गायत्री मंत्र केवल स्थूल जगत् की समृद्धियाँ ही प्रदान नहीं करता, वरन् वह हमारी आत्मा और बुद्धि को ऐसी सूक्ष्म शक्तियाँ भी प्रदान करता है, जिनसे हम किसी आकस्मिक आवश्यकता या संकट के अवसर पर भी अपनी रक्षा का उपाय कर लेते हैं। कितने ही अवसरों पर तो हमको तत्काल ही प्रेरणा देकर ऐसे कार्य करा देता है कि जो साधारणतः हमारी शक्ति और योग्यता से बाहर होते हैं और जिन्हें हम दैवी सहायता के अतिरिक्त कुछ नहीं समझ सकते। इतना ही नहीं जो गायत्री मंत्र को अचल विश्वास के साथ जपते हैं, उनमें अनजाने ही ऐसी दैवी शक्तियों का विकास हो जाता है जिनसे वे आत्मोकर्ष के ऊँचे दर्जे पर चढ़ सकने में समर्थ होते हैं।

गायत्री मंत्र सद्बुद्धि प्रदान करने वाला श्रेष्ठतम मंत्र है। छान्दोग्य उपनिषद् के अनुसार "यह विश्व जो कुछ भी है समस्त गायत्री मय ही है। गायत्री मंत्र प्रत्यक्ष अद्वैत ब्रह्म का द्योतक है। गायत्री मंत्र के मर्म को जानकर जो अपने जीवन में धारण कर लेता है वह त्रैलोक्य विजयी होता है ऐसा वृहदारण्यकोपनिषद् कहता है। आत्म बल बढ़ाकर प्राणों की रक्षा करने वाला गायत्री मंत्र के 'गय' अर्थात् प्राण, 'त्र' अर्थात् त्राण करने वाला माना गया है। गायत्री मंत्र की साधना के विषय में अथर्ववेद में लिखा है:—

"स्तुतोमया वरदा वेदमाता प्रचोदयताम् ! आयु प्राणं प्रजां पशुं कीर्ति द्रविण ब्रह्मवर्चसम्। मह्यमे दत्वा ब्रजत ब्रह्मलोकम्।"

■■

ॐ

भूर्भुवः स्वः

तत्सवितुर्वरेण्यं

भर्गो देवस्य धीमहि

धियो यो नः

प्रचोदयात्।

book is kept overtime.

ॐ

भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः
प्रचोदयात् ।

पल्लव प्रकाशन, दि[illegible]